ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष–पौष, संवत् नानकशाही ५५१
वर्ष १३ अंक ४ दिसंबर 2019

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब–१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार ४
संपादकीय ५
धरम हेत साका जिनि कीआ –डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ ७
श्री गुरु तेग़ बहादर जी की शहादत – डॉ. जगजीत सिंघ १२
अल्ला यार खान योगी एवं उनकी अद्वितीय रचना –सिमरजीत सिंघ १५
साका सरहिंद –डॉ. मनमोहन सिंघ १९
सरसा बेवफा निकली (कविता) –स. सतिनाम सिंघ कोमल २०
छोटे साहिबजादों की शहादत –डॉ. देवेंद्रपाल कौर २१
माता गुजरी जी –डॉ. जगजीत कौर २२
रंघरेटे गुरु के बेटे : भाई जीवन सिंघ जी –डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल' २८
रंघरेटे गुरु के बेटे— भाई जीवन सिंघ जी (कविता) –श्री रमेश बग्गा चोहला ३०
चमकौर की गढ़ी के शहीद : भाई संगत सिंघ –स. तरलोचन सिंघ ३१
गुरु–घर के अनन्य सेवक भाई नूरा माही जी –डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर' ३४
शहीद बाबा गुरबखश सिंघ –स. वरिआम सिंघ ३६
सेना के महानायक जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) –स. सुरजीत सिंघ ३८
श्री गुरु नानक देव जी (कविता) –स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी' ४०
सिध गोसटि : विचार व्याख्या –डॉ. मनजीत कौर ४१
ख़बरनामा ४६

गुरबाणी विचार

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११ ॥ (पन्ना १३५)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग के 'बारह माहा' की इस पावन पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभूमि में दांपत्य जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव-स्त्री को परमात्मा-पति की खुशियां प्राप्त करने वाला उसके दर-घर का गुरमति मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी का कथन है कि पौष माह के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में भी उस जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है जिसको उसका प्रभु-पति गले मिला हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशल संभाल रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा होता है और उसका एक-एक श्वास उसके दीदार की तीव्र इच्छा में ही लगा होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक राजा की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते, क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से सच्चा प्यार कर एकमन-एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु ने ऐसी नेक जीव-स्त्री का हाथ इस प्रकार पकड़ा होता है कि वह उससे पुनः बिछड़े ही न। ऐसे परमात्मा से तो मैं लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि जीव-स्त्री उस मालिक के द्वार पर आ जाती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि उसको उसकी इज्जत रखनी ही होती है। परमात्मा बेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

संपादकीय

पौष माह की लासानी शहीदी दास्तान

सिक्ख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म में प्रवेश की शर्त यह फरमान करते हुए लागू की थी कि अगर तुझे प्रेम का खेल खेलने का शौक है तो तू मेरी गली में अपना सिर हथेली पर रख कर आ; इस मार्ग पर कदम रख कर सिर दे दे, मगर तेरा कदम पीछे न हटे !

सिक्ख पंथ में कुर्बानियों और संघर्षों का विशेष रूप 'शहादत' या 'शहीदी' बहुत उभरता स्वरूप लेकर उजागर होता है। मैदान-ए-जंग में जूझते हुए और मैदान-ए-जंग से बाहर शत्रु द्वारा घेर लिए जाने की सूरत में शत्रु की अधीनता न स्वीकार करते हुए, धर्म पर अडिग दृढ़ रहते हुए— दोनों तरह से इस विलक्षण पंथ में शहादतें, शहीदियां हासिल करने की अनेक उदाहरणें दृष्टिगोचर होती हैं।

सरसा नदी पर विश्वासघात से प्रेरित दुश्मन के हमले के समय गुरु जी से बिछड़े माता गुजरी जी और गुरु जी के दो छोटे साहिबज़ादे जब नमकहराम गंगू की बदनियत के कारण ज़ालिमों के हाथ आ गए, तो जो ऊँचा हौसला और अकीदा माता जी तथा छोटे साहिबज़ादों ने हुकूमती ज़ुल्म, जब्र और अत्याचार की परिस्थितियों में दिखाया, उसका अनुमान लगाते ही सहृदय मानवीय संवेदना जहाँ दृढ़ता, स्थिरता और अकीदे के प्रति परिपक्वता जैसे गुणों का संचार करने लगती है, वहीं वह स्वयं प्रताड़ित किये जाने के अनुभव से भी गुज़रती महसूस करने की संभावना रखती है। माता गुजरी जी ठंडे बुर्ज में अपने पोतों को उनके पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ऊँचे मिशन, उनके दादा जी के दादा जी पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज की शहादत और उनके दादा जी की शहादत के प्रसंग सुनाते एवं याद करवाते रहे और बार-बार कहते रहे कि देखना बेटा! कहीं डर न जाना! आप शहीदों का अंश-वंश हो! सिक्ख शहीदी विरासत के वारिस हो! वह कौन-सा लालच था जो नन्हें गुरु-लालों को न दिया गया? वह कौन-सा डरावा था जो उनको न दिया गया? नन्हें गुरु-लाल रंचक-मात्र भी डगमगाए नहीं। धर्म पर दृढ़ रहते हुए नींव में चिने गए, ज़ालिम बेदर्दों के हाथों जिबह हो गए, परन्तु सिक्खी आस्था, सिक्खी अकीदा नहीं छोड़ा। माता गुजरी जी ने साहिबज़ादों को सिक्ख धर्म पर अडिग रखने का धर्म निभा कर आदर्श सिक्ख दादी की कसौटी कायम की। १३ पौष, संवत् १७६१ वाले दिन गुरु-लालों की शहादत के साथ-साथ माता गुजरी जी भी शहीद हुए। समूह सिक्ख पंथ इन शहीदों को नत्मस्तक है और इनकी स्मृति में करुणामयी संवेदना में से पौष महीने के इन दिनों के अनुभव में से गुज़रने से नहीं रह सकता।

गुरु जी के चारों साहिबज़ादों और माता गुजरी जी एवं चमकौर साहिब के समूह सिंघ शूरवीरों की शहादतें गौरवशाली सिक्ख शहादत परंपरा में एक ज़िक्रयोग्य विस्तार हैं। ये शहादतें हरेक दौर में लोक को अत्याचारी हुकूमत के सामने खड़े होने और लड़ने की हिम्मत प्रदान करती रही हैं, आज भी प्रदान कर रही हैं और आने वाले युग में भी प्रदान करती रहेंगी। इन शहीदी साकों ने इसके बाद के सिक्ख इतिहास को सृजित करने में अहम योगदान दिया। इसी आधार पर पंजाब की धरती पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर, सिक्ख मिसलों और महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में सिक्ख राज्य/ खालसा राज्य स्थापित हुआ।

आज के मोड़ पर सिक्ख पंथ की मौजूदा हालत अनेक चुन्नौतियों सहित गंभीर विश्लेषण करने की मांग करती है। सिक्ख पंथ ने बीसवीं सदी के बीते कुछ दशकों में समकालीन युग के संदर्भ में बड़ा संताप भोगा और नसलकुशी जैसे घटनाकर्मों का भी दुख सहा है। इसके बहुपक्षीय कारणों की जांच अभी हो रही है। मौजूदा समय में सिक्ख पंथ के हरियावल दस्ते— सिक्ख नौजवानों में सिक्खी स्वरूप की संभाल के प्रति जो लापरवाही नज़र आ रही है वह बेहद दुखदायक है। और तो और, आज सिक्ख परिवारों के साथ सम्बन्ध रखने वाले नौजवान नशों के जानलेवा हमले का भी शिकार हो रहे हैं। यह हालत गहरा चिंतन करने की मांग करती है और सभी कारणों की तह तक जाकर उनको दूर करने की ज़रूरत है। सिक्खी-समर्पण और सिक्खी-चेतना की कमी स्पष्ट नज़र आ रही है। इस नाजुक मोड़ पर सिक्ख पंथ के समूह धार्मिक और राजसी नेताओं, समूह धर्म-प्रचारकों, सिक्ख माँ-बाप और सिक्ख अध्यापकों को सिक्ख नौजवान वर्ग की कायाकल्प करने के लिए विशेष प्रयत्न करने चाहिए। सोचने की ज़रूरत है कि साहिबज़ादों ने तो नींव में चिने जाना कबूल कर लिया परन्तु सिक्खी स्वरूप और सिक्खी भावना को आँच नहीं आने दी, लेकिन हमारा सिक्ख नौजवान सिक्खी स्वरूप से ख़ुद ही बाग़ी हो रहा है; उसकी सिक्खी भावना तेज़ी के साथ धीमी पड़ रही है। यह जागने और कुछ करने का समय है। साहिबज़ादों, माता गुजरी जी और चमकौर साहिब के समूह शहीदों की शहादतों पर बनी शहीदी परंपरा हमें सिक्खी स्वरूप और सिक्खी उसूलों के प्रति चेतनता प्रदान कर सकती है। वाहिगुरु करे, हमारी नौजवान पीढ़ी हमारे सकारात्मक प्रयत्नों के कारण मौजूदा आलस्य को त्याग कर सिक्खी स्वरूप और सिक्खी उसूलों के संचार की दिशा की तरफ क्रियाशील होने के लिए अपनी वचनबद्धता को दिखाना आरंभ करे! इस सूरत में यह शहीदी विरासत की संभाल का उसकी तरफ से किया अहदनामा साबित हो सकता है।

धरम हेत साका जिनि कीआ

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

श्री गुरु तेग बहादर जी का पूरा जीवन धर्म के लिये त्याग और बलिदान का जीवन था। धर्म से लोग पाने की आशा तो रखते हैं किन्तु धर्म के लिये डट कर खड़े होने का साहस किसी विरले में ही दिखाई देता है। वर्तमान में धर्म का अर्थ बहुत संकुचित हो गया है। धर्म को एक निश्चित और सुविधाजनक दायरे में समेट लिया गया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने मनुष्य के धर्म को परिभाषित करते हुए फरमाया है— ''रे मन ओट लेहु हरि नामा॥ जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना॥'' गुरु साहिब के अनुसार मनुष्य का परमात्मा पर भरोसा दृढ़ हो जाये, मनुष्य ऐसी भक्ति करे कि उसके सारे भ्रम दूर हो जायें, सारे विकार, अवगुण दूर हो जायें और निर्लिप्त अवस्था प्राप्त हो जाये। गुरु जी के वचनानुसार विकार दूर किये बिना परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती है। अवगुणों, विकारों से उबरना ही परमात्मा की राह पर चलने के लिये मुख्य चिंता है— ''साधो कउन जुगति अब कीजै॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै॥'' मन में विकार, दुर्भावना चल रही हो तो मनुष्य परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता और न ही उसकी भक्ति को धर्म कहा जा सकता है। गुरु साहिब ने फरमाया कि संसार में अधर्म का ही बोलबाला है और सभी स्वार्थों में लिप्त हैं :

साधो इहु जगु भरम भुलाना॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना॥१॥रहाउ॥
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना॥
(पन्ना ६८४)

इसके पूर्व श्री गुरु नानक साहिब भी कह चुके थे कि धर्म पंख लगा कर कहीं उड़ गया है और ढूंढे नहीं मिल रहा है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने फरमाया कि मनुष्य धर्म का पालन छोड़ कर माया, विकारों का गुलाम हो गया है और परमात्मा से सम्बन्ध तोड़ कर सांसारिक रिश्तों के मोह में उलझ कर रह गया है। शक्ति, धन-दौलत और सत्ता उसके सिर चढ़ कर बोल रही है। भारत में उस समय मुगलों का राज था। वे सत्ता के मद में अंधे हो लोगों को प्रताड़ित कर रहे थे। सिक्ख गुरु साहिबान का पहला उद्देश्य लोगों को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना था और दूसरा उद्देश्य सच्चा धर्म धारण करने का संकल्प दृढ़ कराना था। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा आरंभ किया गया यह मिशन जब श्री गुरु तेग बहादर जी तक पहुंचा तो परिस्थितियां काफी हद तक बदल चुकी थीं। पहले धर्म और समाज की स्वार्थी शक्तियां ही लोगों की भावनाओं का शोषण कर अपनी लोभ-लालसा की पूर्ति कर

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८९९

रही थीं किन्तु अब शासक वर्ग ने धर्म को हथियार बना कर अपनी गद्दी को मजबूत करने की नई राह खोज ली थी। जब समाज की सबसे शक्तिशाली संस्था अपने स्वार्थ के लिये धर्म और समाज का उपयोग करना आरंभ कर दे तब सच की राह पर चलना असंभव-सा हो जाता है। बड़े-बड़े धार्मिक, सामाजिक संकल्प धरे रह जाते हैं और लोग बेबस होकर मूक, बधिर बन जाते हैं। श्री गुरु नानक साहिब का पंथ ऐसा कभी नहीं था। यह सिर देकर धैर्य ग्रहण करने तथा धर्म के प्रति समर्पण को बनाये रखने और उस पर खरा उतरने वालों का पंथ है। श्री गुरु तेग बहादर जी उसी महान संकल्प की रक्षा की शिखर शक्ति थे। वे जानते थे कि माया और विकारों के वशीभूत हो लोग परमात्मा और धर्म से दूर हो गये हैं। ऐसे लोगों को जगाने और चेतना भरने का उपकार श्री गुरु तेग बहादर जी ने किया :

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥

(पन्ना ७२६)

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी की यह बड़ी विशेषता है कि जीवन के अकाट्य सत्य को उन्होंने बड़ी ही सहजता से उजागर किया। गुरु जी ने मनुष्य की चेतना को पूरी तरह से झिंझोड़ा ताकि वह अज्ञान और भ्रम की गहरी नींद से उठ जाये। मनुष्य की सबसे पहली और गंभीर चिंता अपने शरीर को लेकर होती है, जिसकी सुख-सुविधा और उसे सजाने-संवारने में वह अपने जीवन का बड़ा हिस्सा लगा देता है। गुरु साहिब ने कहा कि यह जीवन के दुर्लभ समय को व्यर्थ गंवाना है। यह तन भले ही जन्म के साथ ही प्राप्त हुआ है किन्तु अंततः इसका कोई लाभ नहीं मिलने वाला है। विडम्बना तो यह है कि मनुष्य जिन सांसारिक सम्बंधियों के लिये अपना पूरा जीवन खपाता रहता है वही माता-पिता, सन्तान, मित्र आदि मिल कर, मृत्यु होने पर अग्नि में डाल कर भस्म कर देते हैं। इस तरह उसका सबसे प्रिय तन और उसके संबंधी दोनों ही उसके साथ नहीं रहते। गुरु जी ने कहा कि बस, परमात्मा की भक्ति ही ऐसी कमाई है जो सदा उसके साथ चलती है— ''हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥'' श्री गुरु तेग बहादर जी ने स्वयं अपने जीवन में इसे सिद्ध कर दिखाया। पिता श्री गुरु हरिगोबिंद जी के ज्योति-जोत समाने के पश्चात वे अपनी मां माता नानकी जी और सुपत्नी माता गुजरी जी के साथ गांव बकाला आ गये। यहां एक साधारण-से घर में रह कर उन्होंने अपना पूरा ध्यान परमात्मा की भक्ति में लगाया। गुरु साहिब ने इक्कीस साल बाबा बकाला में जप-तप, धर्म-प्रचार और संयम-संतोष का जीवन व्यतीत किया। धर्म में परिपूर्ण होने के साथ वे विनम्रता और सहजता की मूर्ति थे। वे सच धारण कर परमात्मा में अभेद हो चुके थे :

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥

(पन्ना ७०३)

श्री गुरु तेग बहादर जी ने वचन किये कि मनुष्य का धर्म परमात्मा, संसार और जीवन के सच को जान कर उसे ग्रहण कर लेना है, ताकि कोई भ्रम और दुविधा न रहे। उन्होंने कहा कि संसार में जो भी दृष्टिगोचर है वह मिथ्या है , सारहीन है, जो मनुष्य के जीवन-उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक नहीं है। इससे ज्यादा मोह न लगायें। सत्य-मार्ग पर चलते हुए परमात्मा की शरण व कृपा प्राप्त हो जाती है। अपने अंतर् में परमात्मा का दर्शन कर लेना और उसके गुणों, महानता की पहचान कर लेना ही धर्म है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने फरमाया कि मनुष्य का मन धर्म और परमात्मा में टिकता ही नहीं है, भटकता ही रहता है—''यह मनु नैक न कहिओ करै॥'' मनुष्य अपने मन की करता रहता है और पाप करने में तनिक भी संकोच नहीं करता। उसने प्रकट रूप में भले ही सद् आचरण और धर्म का चोला पहन रखा है किन्तु प्राय: वो संसार के साथ ठगी करता है। उसे धर्म का कितना भी उपदेश सुनने को मिले लेकिन उसका आचरण नहीं सुधरता और वह अधर्म में ही लिप्त रहता है— ''सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै॥'' ऐसे हालात में मनुष्य को परमात्मा से जोड़ना बहुत बड़ा कौतुक था, जो श्री गुरु नानक साहिब ने 'सतिनाम' का चक्र चला कर संभव किया था। लाखों लोग उस पंथ पर चलते हुए नाम जप कर अपने जीवन को सफल कर गए। श्री गुरु तेग बहादर जी ने भी यही फरमाया है कि— ''कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै॥'' बाबा बकाला रह कर श्री गुरु तेग बहादर जी ने स्वयं भी यही किया और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बाद गुरुआई पर आसीन हो सिक्खों को भी यही प्रेरणा दी। श्री गुरु नानक साहिब के बाद वे पहले गुरु थे जिन्होंने लंबी धर्म प्रचार-यात्रायें की।

श्री गुरु तेग बहादर जी का मानवता को संदेश परमात्मा की महानता को जानने और पहचानने का था— ''दुख हरता हरि नामु पछानो॥'' जो परमात्मा का नाम नहीं जप रहे उनके जीवन दुखों से भरे हुए हैं। वे चाहे जितने तीर्थ-स्नान कर लें, व्रत रख लें, उनका जीवन निरर्थक ही रहता है, यदि मन में परमात्मा का एहसास नहीं है। नाम जपते ही आवागमन से मुक्ति प्राप्त होती है और ऐसे ही लोग श्रेष्ठता पाते हैं— ''कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै॥''मनुष्य के सामने एक बड़ा सवाल है कि वह माया और विकारों से कैसे उबरे— ''साधो कउन जुगति अब कीजै॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै॥'' मन कुबुद्धि से हट भी जाये और परमात्मा में रम भी जाये। संसार के रस छूट जायें और परमात्मा के नाम का रस हृदय में बस जाये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अनमोल वचन किये कि सच्चा धर्म परमात्मा के गुणों का गायन करने और उन्हें मन में धारण करने में ही है— ''सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई॥'' दसम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने फरमाया कि श्री गुरु तेग बहादर जी ने धर्म हेतु महान बलिदान दिया। यह समझना आवश्यक हो जाता है कि श्री गुरु तेग बहादर जी ने जो जीवन जीया और जिस तरह दिल्ली में बलिदान दिया उसके पीछे इन्हीं विचारों की

प्रेरणा थी। गुरु साहिब का पूरा जीवन मानवता को परमात्मा के साथ जोड़ने को समर्पित था। दिल्ली में उनका बलिदान भी इसी मिशन का हिस्सा था। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा से जुड़ना सुख की प्राप्ति है :

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ (पन्ना १००८)

परमात्मा की भक्ति सदा सुखद फल देने वाली है। परमात्मा को मन में धारण कर किये गये कर्म जीवन में सहज, संतोष और संतुष्टि देने वाले होते हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी ने परमात्मा को 'दुख हरता' की उपमा दी है। इसका तात्पर्य है कि परमात्मा की भक्ति और कृपा सदैव सुख देने वाली है। धर्म वह है जो मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में सुख लाये। श्री गुरु तेग बहादर जी की भक्ति सुख और आनन्द की अवस्था थी। प्राय: अज्ञानवश श्री गुरु तेग बहादर जी और उनकी बाणी को त्याग एवं वैराग्य का पर्याय मान लिया जाता है, किन्तु ऐसा हरगिज नहीं है। गुरु साहिब ने वे सारे त्याग किये जो त्याग करने योग्य थे। उन्होंने तन के मोह का परित्याग किया— ''साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥'' तन का मोह त्याग कर उन्होंने मन में बसने वाले परमात्मा से प्रेम किया— ''या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥'' उन्होंने संसार को स्वप्न कहा और इसलिये संसार का मोह त्याग दिया, क्योंकि स्वप्न कभी सच नहीं होता— ''इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥'' उन्होंने अहंकार आदि को त्याग कर मन में परमात्मा को स्थान दिया— ''उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥'' गुरु साहिब ने माया-मोह का त्याग किया और सच्चे ज्ञान से मालामाल हो गये— ''माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥'' इस त्याग से उन्हें जो अवस्था प्राप्त हुई वह अनमोल थी— ''माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥'' वे नाम-धन से धनवान बन गये, आध्यात्मिक प्राप्ति से पूर्ण समृद्ध हो गये। मन सुख के सागर में लीन हो गया— ''त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥'' यह सुख धर्म का पावन फल है। श्री गुरु तेग बहादर जी सुख और आनन्द की मूरत थे। वे सुख और आनन्द का अथाह सागर थे और यही संसार को देने आये थे। उन्होंने बार-बार प्रेरणा दी— ''रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥'' श्री गुरु तेग बहादर जी के लिये धर्म प्रचार उनके जीवन का एकमात्र कर्त्तव्य था। यही कारण था कि कोई अन्य मोह उनकी राह में कभी बाधा नहीं बन सका। उन्होंने युद्ध के मैदान में अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के नेतृत्व में तेग के कौशल दिखाए। संयम और सहज से परमात्मा की आराधना की। पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश के समय भी ढाका व आसाम की ओर धर्म प्रचार करने चले गये। अपने सुपुत्र का मुख तब देखने का अवसर मिल पाया जब वे पांच साल के हो गये थे। उनके लिये तो प्राथमिकता थी— ''जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥''

श्री गुरु तेग बहादर जी की दृष्टि में धर्म का उद्देश्य जीवन-मुक्त हो जाना था। उन्होंने मुक्त हो जाने के लक्षण भी प्रकट किये। आपने वचन किये कि सुख, दुख, लोभ, मोह, अहंकार से उबर जाना अर्थात् सहज अवस्था में आ जाना मुक्त हो जाना है। संसार की प्रशंसा-निंदा के

प्रभाव से बाहर आ जाना, लोहे और सोने को एक समान जानना अर्थात् समदृष्टि प्राप्त कर लेना जीवन-मुक्ति है। हर्ष और विषाद में एक जैसा आचरण, मित्र और वैरी के साथ एक जैसी भावना का होना जीवन-मुक्ति का प्रतीक है। जो न तो किसी को दुख दे, न किसी के साथ अन्याय करे और न किसी का दिया दुख, अन्याय सहन करे, वही सच्चा धर्म-पालक और जीवन-मुक्त है। जिसने सारे भ्रम, आडंबर और कुविचार, कुकर्म त्याग दिए हैं, वही सच्चा त्यागी है। जो अपने मूल को पहचान कर परमात्मा की शरण में चला जाता है उसे जीवन-मुक्त कहा जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने निर्णायक वचन किये कि माया और विकारों को त्याग कर परमात्मा की शरण में चले जाने वाला मनुष्य अपना भी उद्धार करता है और पूरे समाज का भी हित करता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दिल्ली में दिए गये बलिदान को इस परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। बेशक कश्मीरी ब्राह्मणों की करुणामयी प्रार्थना सुन कर श्री गुरु तेग बहादर जी ने बलिदान देने का निर्णय लिया था किन्तु इस निर्णय की पृष्ठभूमि में सुखी समाज की स्थापना का भाव था। औरंगजेब ने सामाजिक शान्ति और सुख को भंग कर दिया था। लोगों को अपने धर्म का पालन करने से बड़ी निर्दयता और क्रूरता से वंचित किया जा रहा था। यह गुरु-शबद— ''भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥'' की भावना के विपरीत था। श्री गुरु तेग बहादर जी— ''घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि॥'' के संदेश-वाहक थे। कश्मीर के ब्राह्मणों में भी उन्हें परमात्मा के दर्शन हुए और उनकी रक्षा करना गुरु साहिब का धर्म बन गया। यह धर्म बिना बलिदान दिये संभव नहीं था, इसलिए गुरु साहिब ने बलिदान देने में तनिक भी संकोच नहीं किया। श्री गुरु तेग बहादर जी का बल परमात्मा स्वयं था और वही बल उनके जीवन में निरंतर प्रकाशमान रहा :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥
(पन्ना १४२९)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने फरमान किया कि श्री गुरु तेग बहादर जी ने जिस सहजता, शांत-चित्त अवस्था और परमात्मा के ध्यान में रमे हुए अपना शीश दिया, उससे सुरलोक में भी जय-जयकार होने लगी। औरंगजेब की निर्दयता और धार्मिक कट्टरता पर यह पहला और भरपूर प्रहार था। उसे समेटने और ध्वस्त करने का कार्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया। गुरसिक्ख जब अरदास करता है तो श्री गुरु तेग बहादर जी से नौ निधियों की याचना करता है। ये नौ निधियां जीवन-मुक्त होने के गुण हैं, जिनका वर्णन गुरु साहिब ने अपनी पावन बाणी में किया है। गुरसिक्ख उनसे सर्वत्र रक्षा करने की याचना भी करता है, जैसे उन्होंने घोर विपत्ति में कश्मीरी ब्राह्मणों की थी। श्री गुरु तेग बहादर जी का पूरा जीवन मनुष्य के लिये मुक्ति की राह दिखाने वाला है कि कैसे धैर्य, संयम और सत्य धारण कर जीवन को परमात्मा की शरण के योग्य और मानव-समाज के लिये हितकारी बनाया जा सकता है।

श्री गुरु तेग़ बहादर जी की शहादत

– डॉ. जगजीत सिंघ*

निस्संदेह श्री गुरु तेग़ बहादर जी की महान शहादत अद्वितीय शौर्यगाथा है। ऐसी घटना की उदाहरण मानवता के इतिहास में या धर्म की आज़ादी के समूचे इतिहास में मिलनी कठिन है, जब किसी दूसरे धर्म के अनुयायियों पर बने धर्म-संकट को रोकने के लिए किसी महान शख्सियत ने अपना बलिदान दिया हो। इसीलिए आप जी को श्री गुरु तेग़ बहादर—हिंद की चादर कह कर याद किया जाता है।

आप जी का प्रकाश प्रथम अप्रैल, सन् १६२१ ई. तद्नुसार ५ वैसाख, संवत् १६७८ बिक्रमी को पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और माता नानकी जी के गृह में हुआ। आप पांच भाइयों में से सबसे छोटे थे। आप जी का बचपन श्री अमृतसर में बीता, जहां भाई गुरदास जी की निगरानी में आप जी ने हर तरह की विद्या और गुरबाणी की शिक्षा प्राप्त की। बाबा बुड्ढा जी ने आपको घुड़सवारी, नेज़ेबाज़ी और शौर्य के कई कर्त्तव्य सिखाए। आप जी की राग-विद्या में विशेष रुचि थी। आप जी का विवाह माता गुजरी जी के साथ हुआ, जो करतारपुर के रहने वाले श्री लाल चंद और माता बिशन कौर की सुपुत्री थीं।

शाहजहान दिल्ली के तख़्त पर बैठा। जहांगीर के समय से ही दिल्ली दरबार की नज़र गुरु-घर के प्रति अच्छी नहीं थी। परिणामस्वरूप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के मुगलों के साथ कई युद्ध हुए और विशेष तौर पर करतारपुर के युद्ध में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तेग के जौहर दिखाए। पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के १६४४ ई. में ज्योति-जोत समाने के पश्चात आप जी माता नानकी जी और अपनी सुपत्नी माता गुजरी जी सहित बकाला आ गए। यहां एकांत में रह कर आप जी ज्यादा समय प्रभु-चिंतन में लीन रहते। गुरु-घर में चल रहे सेवा-कार्यों के साथ भी आप निरंतर जुड़े रहे।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बाद सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब और उनके बाद उनके सुपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए। आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब नवम गुरु के बारे में 'बाबा बकाला' कहकर ज्योति-जोत समा गए।

बाबा बकाला गांव में आप जी को भाई मक्खण शाह लुबाणा ने ''गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे!!'' संगत के सामने पुकार कर प्रकट किया। धीरमल्ल और शीहां मसंद के विरोध को आप जी ने सहनशीलता के साथ सहन किया। २० मार्च, १६६५ ई. को आप जी को औपचारिक तौर पर गुरगद्दी सौंपी गई और आपने सिक्ख पंथ की बागडोर संभाली। गुरु जी ने मसंदों के माध्यम से तथा हुकमनामे जारी कर दूर-दराज बैठी सिक्ख संगत के साथ संपर्क कायम किया। आप तीन बार कीरतपुर साहिब गए और पंजाब के माझा, मालवा एवं बांगर इलाके का दौरा कर सिक्ख संगत को उत्साह प्रदान किया। मई, १६६५ ई. में आप बिलासपुर गए। यहां के राजा दीप चंद और महारानी चंपा से आपने माखोवाल की ज़मीन

*२५/७, साहिबजादा अजीत सिंघ नगर, मोहाली—१६००६१

ख़रीदी और यहां पर नया नगर आबाद किया, जिसका नाम 'चक्क नानकी' रखा। बाद में यह स्थान 'श्री अनंदपुर साहिब' नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुरु की संगत के साथ निजी संपर्क स्थापित करने के लिए आपने लम्बी यात्रा की। रोपड़, बनूड़, राजपुरा, बहादुरगढ़, धमधान होते हुए आप दिल्ली पहुंचे। यहां से मथुरा, आगरा, एटा, कानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर और बनारस की संगत को दर्शन दिए। सासाराम और बौद्ध गया से पटना साहिब पहुंचे जहां परिवार को छोड़ कर मुंगेर के रास्ते ढाका पहुंचे। यहां पर ही आप जी को ख़बर मिली थी कि पटना साहिब में आप जी के घर (१६६६ ई. में) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ है।

ढाका में आप जी के दर्शन करने आंबेर का राजा राम सिंह आया, जिसे औरंगजेब ने आसाम के औहमा को काबू करने के लिए भेजा था। गुरु जी राजा राम सिंह के साथ ही ब्रह्मपुत्र नदी पार कर धूबड़ी नामक स्थान पर पहुंचे। यहां आप जी ने राजा राम सिंह और औहम राजा चक्रध्वज में संधि करवाई, जिसकी याद में सुंदर गुरुद्वारा साहिब बना हुआ है। यहां से आप जी वापिस परिवार के पास पटना साहिब पहुंचे। परिवार को श्री अनंदपुर साहिब जाने का आदेश देकर आप दिल्ली की संगत से मिले। फिर आप मालवा होते हुए वापिस श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गए।

इस प्रकार लंबी यात्राओं के द्वारा दूर-दराज़ की संगत के साथ मेल-मिलाप के कारण आप जी हिंदुस्तान के कई प्रदेशों, शहरों और कसबों में धार्मिक रहनुमा के तौर पर प्रसिद्ध हो गए। आम लोग मुग़ल हुकूमत के भय में जी रहे थे। विशेषत: जहांगीर के शासन-काल में हिंदू प्रजा को जबरन मुसलमान बनाने की प्रक्रिया ज़ोर पकड़ रही थी। मुगल शासकों में दूसरे धर्मों के प्रति सहनशीलता बिलकुल नहीं थी। वे प्रत्येक नागरिक को मुसलमान बनाने के लिए हर तरह की कठोरता और ज़ुल्म करने से भी संकोच नहीं करते थे। मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने १६६९ ई. में हिंदू प्रजा पर फिर जज़िया (कर) लगा दिया। इस हुक्म को अमली जामा पहनाने के लिए कश्मीर में विशेष तौर पर सख़्ती की गई। कश्मीर के गवर्नर इफ्तख़ार ख़ान (१६७१-१६७५ ई.) के हुक्म से मुसलमान बनने से मना करने वालों को बहुत दुख और कष्ट देने शुरू किये गए। गरीब और कमज़ोर लोगों के पास कोई चारा नहीं था। वे मजबूरन मुसलमान बनने लगे। कश्मीर के पंडित इस हालात से बहुत परेशान हुए। उन्होंने इस मुसीबत से बचने के लिए सलाह-मशविरा किया। आखिर ब्राह्मण वर्ग का एक जत्था मटन के निवासी पंडित कृपा राम के नेतृत्व में २५ मई, १६७५ ई. को चक्क नानकी (श्री अनंदपुर साहिब) पहुंचा। श्री गुरु तेग बहादर जी को सारी दुख भरी दास्तान बतायी और मदद करने के लिए विनती की। पंडित कृपा राम से दुख भरी दास्तान सुन कर गुरु महाराज गंभीर हो गए और सोचने लगे कि इस ज़ुल्म को कैसे रोका जाये? आप जी अंतर्ध्यान होकर सोच ही रहे थे कि होनहार बाल गोबिंद राय जी, जिनकी आयु उस समय ९ वर्ष थी, पिता-गुरु के पास आ पहुंचे। पिता जी को गंभीरता का कारण पूछा। गुरु जी ने बाल गोबिंद राय जी को प्यार किया, पास बिठाया और कश्मीरी पंडितों की दुख-भरी दास्तान बतायी और कहा कि इस ज़ुल्म को किसी महान आत्मा की कुर्बानी ही रोक सकती है। बाल गोबिंद राय जी ने दृढ़तापूर्वक कहा कि आप जी के अलावा महान आत्मा और कोई नहीं हो सकती। गुरु जी यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और उनको विश्वास हो गया कि बाल गोबिंद राय जी सिक्ख पंथ का नेतृत्व करने के योग्य हो गए हैं। उन्होंने अपना बलिदान देने की धारणा बना ली और

कश्मीरी पंडितों से कहा कि वे वापिस कश्मीर लौट जाएं तथा गवर्नर को कह दें कि श्री गुरु तेग बहादर जी उनके नेता हैं। अगर वे मुसलमान बनना स्वीकार कर लेंगे तो हम सभी मुसलमान बन जायेंगे।

गवर्नर ने जब औरंगजेब को यह संदेश भेजा तो उसने तुरंत श्री गुरु तेग बहादर जी की गिरफ़्तारी के हुक्म जारी कर दिए और श्री अनंदपुर साहिब की तरफ सिपाही भेज दिए। सिपाहियों के पहुंचने से पहले ही गुरु जी ने दिल्ली की तरफ यात्रा शुरू कर दी, जिससे लोगों को हो रहे अत्याचारों से अवगत करवाया जाये।

आपको गिरफ्तार कर आप पर हर तरह का जुल्म किया गया, ताकि आप इसलाम में शामिल होना स्वीकार कर लें। न शारीरिक कष्ट और न दुनियावी लालच आपको अपने इरादे, धर्म और सत्य के मार्ग से विचलित कर सके। जब अधिकारियों का कोई वश न चला तो आप जी को अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए करामात दिखाने हेतु कहा गया। आपने ऐसा करने से मना करते हुए कहा कि परमात्मा के हुक्म में हस्तक्षेप करना शोभा नहीं देता। जब गुरु जी ने हुकूमत की कोई बात न मानी तो आप जी को चांदनी चौक में ११ नवंबर, १६७५ ई. को आम लोगों की मौजूदगी में शहीद कर दिया गया। हुकूमत के प्रकोप से डरते हुए आपके शरीर की संभाल के लिए कोई भी आगे न आया। शाम के अंधेरे में भाई लक्खी शाह गाड़ी लेकर आए। गुरु जी का धड़ गाड़ी में रखा और अपने घर ले गए। मुगलों के भय के कारण खुले तौर पर दाह संस्कार करना संभव नहीं था, इसलिए भाई लक्खी शाह के परिवार ने गुरु जी का शरीर अपने घर के अंदर रख कर घर को ही आग लगा दी। शरीर के दाह संस्कार के साथ घर भी जल कर राख हो गया। आजकल इस पावन स्थान पर गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब सुशोभित है। चांदनी चौक में, जहां गुरु जी को शहीद किया गया था, वहां गुरुद्वारा सीसगंज साहिब सुशोभित है।

शहादत के तुरंत बाद बड़ी भगदड़ मची, जिसमें भाई जैता जी ने गुरु जी के शीश की संभाल की और सीधे श्री अनंदपुर साहिब की तरफ चल दिए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरु जी की शहादत का सारा प्रसंग बताया और गुरु जी का शीश भेंट किया। गुरु जी ने सम्मान और प्यार में शीश झुकाया। भाई जैता जी को गले से लगा आशीर्वाद दिया और कहा, 'रंघरेटे, गुरु के बेटे!' जिस जगह पर शीश का दाह संस्कार किया गया, उस स्थान पर गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, श्री अनंदपुर साहिब सुशोभित है। दिल्ली से भाई लक्खी शाह तथा अन्य संगत भी पहुंच गई। सभी ने शहादत की दर्दनाक शौर्यगाथा का आंखों देखा हाल गुरु जी को सुनाया और 'गुरु तेग बहादर, हिंद की चादर' कह कर उनकी जय-जयकार की। यह महान साका धर्म की रक्षा हेतु घटित हुआ।

इस शहादत से एक तरफ़ हिंदुस्तानी जनता में जागृति आई कि उनको अपने धर्म पर कायम रहते हुए, जुल्म को रोकने हेतु कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। दूसरी तरफ़ हाकिम श्रेणी को भी यह ज्ञान हो गया कि किसी को भयभीत कर ज़बरदस्ती धर्म-परिवर्तन करवाना आसान काम नहीं है।

पिता-गुरु की महान शहादत ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गहरी सोच में डाल दिया और वे जुल्म की रोकथाम के लिए किसी महान योजना को बनाने एवं अमल में लाने के लिए गंभीर हो गए। १६९९ ई. की वैसाखी को हुई खालसा पंथ की सृजना इस गंभीर सोच का ही निष्कर्ष था और इस सृजना में श्री गुरु तेग बहादर जी के बलिदान की बहुत बड़ी देन है।

अल्ला यार खान योगी एवं उनकी अद्वितीय रचना

-सिमरजीत सिंघ*

अल्ला यार खान योगी एक सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि हुए हैं, जिनका सिक्खों के दिल में बहुत सत्कार है। इनका पूरा नाम 'हकीम अल्ला यार खान रहमान' अथवा 'दकनी' था। इनको 'योगी' उपनाम से भी याद किया जाता है। इनके जन्म एवं मृत्यु के बारे में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। ये अनारकली, लाहौर के निवासी थे तथा हिंदू-मुसलिम एकता के पक्षधर थे। इनके पूर्वजों के बारे में अंदाज़ा लगाया जाता है कि वे दक्षिण के रहने वाले थे। योगी जी का जन्म १८७० ई. के आस-पास हुआ माना जाता है। ये व्यवसाय के रूप में ईरानी/यूनानी तबीब (हकीम) थे।

योगी जी का कद लंबा, शरीर गठीला, मूंछें छोटी तथा दाड़ी खसखसी थी। इनकी शक्ल-सूरत ईरानी पीर की झलक पेश करती थी। ये हिंदी, उर्दू तथा फारसी भाषा के विद्वान थे। इन्होंने साका सरहिंद व चमकौर साहिब के साके को मिश्रित भाषा में प्रभावशाली ढंग से पेश किया। इनकी जुबान में इतना रस था कि जब ये शहीदी साके पढ़ते थे तो श्रोताओं पर जादुई असर होता था। अल्ला यार खान योगी का सिक्ख श्रोताओं में बहुत प्रभाव था। ये सिक्ख कवि-दरबारों के अलावा चमकौर साहिब, ननकाणा साहिब तथा फतहिगढ़ साहिब में ऐतिहासिक समागमों में हिस्सा लेकर पंजाबियों को श्रद्धा, धैर्य तथा कुर्बानी का पाठ पढ़ाया करते थे। इन्होंने १९०९ ई. से १९१५ ई. तक उर्दू का मासिक पत्र 'गऊ माता' प्रकाशित किया, जिसकी संपादना आपने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से की। इस मासिक पत्र द्वारा आपने सैकड़ों मुसलमानों के साथ-साथ मुसलमान रियासतों के नवाबों को गाय-रक्षा हेतु रज़ामंद किया। इन्होंने कड़ा परिश्रम कर अपने तर्कवादी विचारों से कुसतुनतुनिया (तुर्की) के मौलवी से गाय-हत्या के विरुद्ध एक फतवा भी ले लिया था।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबज़ादों की शहादत से आप बहुत प्रभावित थे। आपने उनकी शहादत के बारे में मीर अनीस की पैरवी करते हुए मरसिए लिखे, जो दो पुस्तकों— 'शहीदानि-वफ़ा' तथा 'गंजि-शहीदां' के रूप में प्रकाशित हुए।

'शहीदानि-वफ़ा' १९१३ ई. में तैयार हुई। इस पुस्तक में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के श्री

*मुख्य संपादक। फोन : ९८१४८-९८२२३

अनंदपुर साहिब के युद्धों तथा छोटे साहिबज़ादों की पावन शहादत का हाल बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में बयान किया गया है। इस पुस्तक में बहुत ही जोशीली तथा हृदय को छू लेने वाली कविता के रूप में सारा प्रसंग बयान किया गया है, जिसके ११७ बंद पुस्तक के लगभग ३७ पृष्ठों पर अंकित हैं।

साका सरहिंद तथा चमकौर साहिब के साके से प्रभावित होकर चाहे अनेक कवियों एवं लेखकों ने अपनी कलम चलाई है किंतु इन साकों के बारे में अपनी काव्य-रचना में अल्ला यार खान योगी ने जो रूह फूंकी है, वो अपनी मिसाल खुद है। शायर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने का दृश्य पेश करते हुए बयान किया है :

तारों की छांव किले से सतगुर रवां हुए।
कस के कमर सवार थे सारे जवां हुए।...
चारों पिसर हुजूर के, हमरह सवार थे।
ज़ोर-आवर और फतह, अजीत और जुझार थे।

सरसा नदी के तट पर जब गुरु जी पहुंचे तो शत्रुओं ने अपनी सभी कसमें भुलाकर गुरु जी के काफिले पर हमला कर दिया। गुरु जी द्वारा शत्रुओं को ललकारने के बारे में कवि ने बयान किया है :

घोड़े को एड़ी दे के गुरू रण में डट गए।
फरमाए बुज़दिलों से कि तुम क्यों पलट गए?
अब आओ रण में जंग के अरमां निकाल लो।
तुम कर चुके हो वार, हमारा संभाल लो।

सरसा नदी पार करते हुए सरसा में आई भीषण बाढ़ के कारण गुरु साहिब से माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादे-- बाबा जोरावर सिंघ जी एवं बाबा फतहि सिंघ जी बिछड़ गए। शायर ने इस घटना को बयान करते हुए लिखा है :

ज़ोर-आवर और फ़तह का इस दम बयां सुनो।
पहुंचे बिछड़ के हाय कहां से कहां सुनो।

काफ़िले से बिछड़कर माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादे अपरिचित रास्ते पर चलते हुए गुरु जी तथा अपने साथियों को ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। इस घटना के बारे में कवि लिखता है :

रस्ते में जब भटक गए नन्हें सवार थे।
तकते पिता को चारों तरफ़ बार बार थे।

वे रास्ते में दादी मां माता गुजरी जी से बड़ी मासूमियत से पूछते हैं :

दादी से बोले, अपने सिपाही किधर गए ?
तड़पा के हाय, सुरति-माही किधर गए ?

इस घटना में गंगू की भूमिका को पेश करते हुए उसकी बेवफाई का ज़िक्र शायर ने इस प्रकार किया है :

बदज़ात बद-सिफात वो गंगू नमक-हराम।
टुकड़ों पे सतगुरू के जो पलता रहा मुदाम।
घर ले के शहज़ादों को आया जो बदलगाम।
था जर के लूटने को किया सब यह इंतजाम।
दुनिया में अपने नाम को बदनाम कर गया।
दुश्मन भी जो न करता वो यह काम कर गया।

जिस घर का तू गुलाम था उससे दगा किया।
ला कर के घर में काम यह क्या बेवफा किया?

जब सरहिंद के सूबे वज़ीर खान की कचहरी में पेश करने के लिए साहिबजादों को सिपाही लेने के लिए आए तो ठंडे बुर्ज में माता गुजरी जी ने साहिबजादों को जो शिक्षा दी, उसको कवि ने यूं बयान किया है :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं।
केशों को कंघी कर दूं ज़रा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्हीं सी कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुमको दूल्हा बना तो लूं।

सूबा सरहिंद ने जब सारे तरीके अपना कर देख लिये तो अपनी कोई पेश न चलती देखकर उसने साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनने का हुक्म दे दिया। इस घटना को बहुत ही करुणामयी ढंग से पेश करते हुए लिखा है :

ठोडी तक ईंटें चिन दी गईं मुंह तक आ गईं।
बीनी को ढांपते ही वो आंखों पे छा गईं।
हर चांद सी जबीन को घन सा लगा गईं।
लखते-जिगर गुरू के वो दोनों छुपा गईं।

अल्ला यार खान योगी इस घटना को सरहिंद की तबाही का कारण मानता हुआ बयान करता है :

योगी जी, इसके बाद हुई थोड़ी देर थी।
बसती सरहिंद शहर की ईंटों का ढेर थी।

अल्ला यार खान योगी सरहिंद की घटना को सिक्ख राज्य की नींव के रूप में देखता हुआ साहिबज़ादों की तरफ से कविता में बयान करता हुआ लिखता है :

हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का है पौधा लगा चले।

पुस्तक 'गंजि-शहीदां' में योगी जी ने चमकौर साहिब की जंग तथा बड़े साहिबजादों की पावन शहादत के बारे में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से लिखा है। इस कविता में ११० बंद हैं जो १९१५ ई. में पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए।

इस पुस्तक में कवि सरसा के तट का दृश्य पेश करता हुआ लिखता है :

जब दूर से दरिया के किनारे नज़र आए।
डूबे हुए सरसा में प्यारे नज़र आए।
यह देख के बिगड़े हुए सारे नज़र आए।
बिफरे हुए सतिगुरु के दुलारे नज़र आए।
कहते थे इजाज़त ही नहीं है हमें रण की।
मट्टी तक उड़ा सकते हैं दुश्मन के चमन की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरसा नदी के तट से अपने काफिले से बिछड़ कर थोड़े-से सिंघों के साथ चमकौर साहिब पहुंच गए। वहां एक छोटी-सी कच्ची गढ़ी में दुश्मन का मुकाबला करने की योजना बनाकर ठहर गए। इस घटना के बारे में कवि लिखता है :

—जब किले में उतारी थी सतिगुर की सवारी।
वाहिगुरू की फतिह दिलेरों ने पुकारी।
वो हुमहुमा शेरों का वो आवाज़ थी भारी।

थर्रा गया चमकौर हुआ जलजला तारी।
सकते में खुदाई थी तो हैरत में जहां था।
नारा से हुआ चरख भी साकन यह गुमां था।
—कुछ लेट गए ख़ाक पे जीं-पोश बिछा कर।
पहरा लगे देने कई तलवार उठा कर।
गोबिंद भी शब्बाश हुए खैमा में जाकर।
देखा तो वहां बैठे हैं गरदन को झुका कर।
वाहिगुरू वाहिगुरू है मुंह से निकलता।
है तू ही तू! तू ही तू!! है मुंह से निकलता।

कवि गुरु जी से प्रभावित होकर लिखता है :

—करतार की सौगंध है, नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वो कम है।
हरचंद मेरे हाथ में पुर ज़ोर कलम है।
सतिगुर के लिखूं वस्फ कहां ताबि-रकम है।
इक आंख से क्या बुलबुला कुल बहिर को देखे!
साहिल को या मंझधार को या लहर को देखे!
किस सब्र से हर एक कड़ी तूने उठाई।
किस शुक्र से हर चोट कलेजे पे है खाई।
वालिद को कटाया, कभी औलाद कटाई।
की फिक्र में, फाके में, हज़ारों से लड़ाई।
हिम्मत से तेरी सब थे सलातीं लरजते।
जुर्रत से तेरी लोग थे ता चीन लरजते।

चमकौर साहिब की गढ़ी में लाखों की संख्या में दुश्मन की फौज का मुट्ठी भर सिंघों ने मुकाबला कर शहादत प्राप्त की। साहिबजादों का रण में जूझने का दृश्य पेश करते हुए कवि लिखता है :

गोबिंद के दिलदार किले से निकल आए।
वो देखिए सरकार किले से निकल आए।
घोड़े पे हो सवार किले से निकल आए।
ले हाथ में तलवार किले से निकल आए।
किया वस्फ हो उस तेग का इस तेगि-ज़बां से।
वो म्यान से निकली नहीं निकली यह दहां से।

लाखों की संख्या में दुश्मन फौज मुट्ठी भर सिंघों का थोड़ा-सा भी हौसला कम नहीं कर सकी। सिंघों की चढ़दी कला तथा दिलेरी के बारे में कवि लिखता है :

अरशाद हो तो सब को अकेला भगा के आऊं।
अजमेर चंद आन में कैदी बना के आऊं।
बाज़ीद खां का सर भी अभी जा के मैं उड़ाऊं।
इक सिंघ एक लाख पे गालिब हुआ दिखाऊं।
'शाबाश!' कह के सतिगुरू फौरन खड़े हुए।
जुर्रत पे पहरेदार की वो खुश बड़े हुए।

चमकौर साहिब के बारे में कवि लिखता है :

चमक है मिहर की चमकौर! तेरे ज़र्रों में।
यहीं से बन के सितारे गए सम्हां के लिये।
गुरु गोबिंद के लखति-जिगर अजीतु-जुझार।
फलक पे इक यहां दो चांद हैं ज़िया के लिये।

अंत में योगी जी चमकौर साहिब की धरती को सारे तीर्थों से पावन एलान करते हुए लिखते हैं :

छाया हुआ दीवान पे अब ग़म का समां है।
बस, ख़त्म शहीदों की शहादत का बिआं है।
बस, एक हिंद में तीर्थ है, यात्रा के लिये।
कटाए बाप ने बच्चे जहां, खुदा के लिये।

साका सरहिंद

-डॉ. मनमोहन सिंघ*

मुगलों व पहाड़ी राजाओं के साथ हुए समझौते के अनुसार श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज अपने सिंघों के साथ सरसा नदी की तरफ रवाना हुए तथा कीरतपुर साहिब होते हुए निरमोहगढ़ की तरफ बढ़े। यहां मुगल सेना अपने प्रण व इकरार को भुलाकर पीछे से तीरों की बारिश करने लगी। सरसा नदी उफान पर थी। नदी पार करते समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का परिवार बिछड़ गया। यहां पर आजकल 'गुरुद्वारा परिवार विछोड़ा साहिब' सुशोभित है। गुरु जी के दो बड़े साहिबजादे व कुछ सिक्ख रोपड़ बूरमाजरा होते हुए चमकौर साहिब की तरफ बढ़ गये। दूसरी तरफ गंगू, जो खेड़ी गांव का रहने वाला था तथा गुरु-घर का रसोइया था, माता गुजरी जी तथा दो छोटे साहिबजादों— बाबा ज़ोरावर सिंघ जी व बाबा फ़तहि सिंघ जी को साथ लेकर गांव खेड़ी पहुंचा। उस समय माता गुजरी जी के पास सोने की मोहरें व धन आदि था। इस सब को देखकर गंगू की नीयत बदल गयी। उसने माता जी का सारा धन चोरी कर लिया। माता जी को सुबह जब इस चोरी का पता चला तो उन्होंने गंगू से पूछताछ की। अपना कसूर मानने की बजाय उसने मोरिंडा के थाने में जाकर माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादों की खबर देकर उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। इस प्रकार माता जी तथा छोटे साहिबजादे गिरफ्तार कर सरहिंद लाए गये।

माता जी को छोटे साहिबजादों सहित सरहिंद ले जाकर ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया। वजीर ख़ान ने साहिबजादों को दरबार में बुलाकर इसलाम धर्म कबूल करने के लिए मजबूर किया, परंतु वे दृढ़ता से अपने धर्म पर अडिग रहे। साहिबजादों की रगों में शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा संत-सिपाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का खून था। साहिबजादों को अनेक प्रकार के लालच दिए गये, परंतु हर बार उन्होंने 'न' में उत्तर दिया। साहिबजादों को डराने-धमकाने के लिए कई व्यक्ति नियुक्त किए गये तथा उन्हें कई प्रकार के शारीरिक व मानसिक कष्ट दिए गये, परंतु सभी असफल रहे।

दीवान सुच्चा नंद ने सलाह दी कि ये सांप के बच्चे हैं, इसलिए इन्हें कुचल देना ही ठीक है।

*८८९, फेस-१०, मोहाली-१६००६२

नवाब ने अपने दूसरे मंत्रियों से दीवान सुच्चा नंद द्वारा तजवीज की गयी सजा की पुष्टि मांगी। मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद खान ने कहा कि पवित्र कुरान मासूम व निर्दोष बच्चों के कत्ल की आज्ञा नहीं देती। काजी ने कहा कि इसलामी कानून काफिरों को इसलाम या मृत्यु दोनों में से एक का चुनाव करने के लिए कह सकता है। काफी ज़ोर देने के बाद भी जब साहिबजादे नहीं माने तो काजी ने दोनों साहिबजादों को दीवार में ज़िंदा चिन देने का हुक्म दे दिया। उन्हें ज़िंदा ही दीवार में चिन दिया गया। बाद में नवाब वजीर खान के हुक्म से जल्लाद साशल बेग व बाशल बेग ने साहिबजादों को बड़ी बेरहमी से कत्ल कर शहीद कर दिया।

साहिबजादों की शहीदी की खबर माता जी के पास पहुंची तो वे इस प्रकार अकाल पुरख के ध्यान में मग्न हुईं कि सदा के लिए उस परम ज्योति में विलीन हो गयीं। साहिबजादों व माता गुजरी जी के शरीर का दाह-संस्कार दीवान टोडर मल्ल, जो कि सरहिंद का साहूकार था, ने किया।

छोटे साहिबजादों की शहीदी विश्व के शहीदी इतिहास में बेमिसाल स्थान रखती है। नि:संदेह छोटे साहिबजादों की शहीदी रौंगटे खड़े कर देने वाली घटना है, जो कि मानवता को अपने धर्म पर अडिग रहने के लिए प्रेरित करती है। हर वर्ष दिसंबर माह में इन महान नन्हें शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए सिक्ख जगत की तरफ से शहीदी दिवस मनाया जाता है।

कविता

सरसा बेवफा निकली

-स. सतिनाम सिंघ कोमल*

समय कपटी रहा उस दिन और सरसा बेवफा निकली।
औरंगे के वजीरों की, हर कसम दगा निकली।
गुरु-संग लाल दो रह गए व दादी संग थे दो पोते,
दो ममता की भरी माता, कि दिल खाली से हा निकली।
बिछड़ गए सब सरसा पे, रुली राहों में है ममता,
बनी कातिल मासूमों की, वो गंगू की दया निकली।
वफा बिक गई, क्या गुजरी? वो गुजरी जिसपे, वोही जाने,
रज़ा में चल पड़े राही, वो राह चमकौर जा निकली।
गढ़ी कच्ची, सिदक पक्का, समय की परख में पूरे,
और शाही फौज दुश्मन की, गुरु जी पास आ निकली।
गुरु के सिंघ हैं चालीस और दुश्मन है वो लाखों में,
लड़े हैं लाल सतिगुरु के, सदा चढ़दी कला निकली।
शहादत दी है बेटों ने, बाप के सामने लड़ कर,
प्रभु का हुक्म माना है, गुरु-मुख से सदा निकली।
रज़ा उसकी में रहना ही, यही मकसद है जीवन का,
शहीदी दोनों बेटों की, न बनकर है गिला निकली।
पड़ी बेकफन लाशें ही, गुरु जी छोड़ कर चल दिए,
किसी यह बाप को मौला, यह कैसी है सजा निकली?
किया है शुक्र बन साबर, गढ़ी को अलविदा कह दी,
जमाना बेवफा 'कोमल', प्रभु से है वफा निकली।

*२४८, अरबन अस्टेट, लुधियाना—१४१०१०, फोन : ९४१७३-७२३४५

छोटे साहिबजादों की शहादत

-डॉ. देवेंद्रपाल कौर*

छोटे साहिबज़ादे बाबा ज़ोरावर सिंघ जी संवत् १७५३ में और बाबा फ़तहि सिंघ जी संवत् १७५६ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा माता जीतो जी के घर श्री अनंदपुर साहिब में पैदा हुए। उस समय श्री अनंदपुर साहिब का बहुत सारा भू-भाग सिक्खों के कब्जे में आ गया था। सिक्खों की बढ़ती ख्याति को देख हिंदू पहाड़ी राजा एवं मुगल शासक गुरु जी के प्रति नफ़रत रखते थे। सिक्खों और पहाड़ी राजाओं में घमासान युद्ध हुआ। गुरु साहिब के सिक्खों की वीरता को देख पहाड़ी राजाओं ने एक और चाल चली। उन्होंने चुपके-चुपके शाही सेना से मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। परिस्थितिवश गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़कर वहां से प्रस्थान कर गए। सरसा नदी पार करते समय गुरु जी पर विपक्षी सेना ने हमला कर दिया, जिस कारण सारा परिवार अलग-थलग हो गया। वहां आजकल 'गुरुद्वारा परिवार विछोड़ा साहिब' सुशोभित है। माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे अलग हो गए। उन्हें गंगू अपने घर ले गया। वह गुरु-घर का रसोइया था। माता जी के पास सोने की मुहरें देखकर गंगू का मन बेईमान हो गया और उसने सोने की मुहरें चुरा लीं। सुबह होने पर माता गुजरी जी ने गंगू को सोने की मुहरों के संबंध में पूछा तो उसने साफ इनकार कर दिया। माता जी कहने लगे कि अगर तुम मांग लेते तो मैं तुम्हें ये मुहरें दे देती। तब गंगू चिल्लाने लगा कि आप मुझे चोर कह रही हैं; मुझ पर चोरी का इलजाम लगा रही हैं। गुस्से में आकर तथा इनाम के लालच में उसने सरहिंद के नवाब को माता गुजरी जी एवं साहिबज़ादों के उनके पास होने की सूचना दे दी।

साहिबजादों का चरित्र बहुत महान और नैतिक स्तर बहुत ऊंचा था। वास्तव में नैतिकता के बिना धर्म कुछ भी नहीं रह जाता। छोटे साहिबज़ादों को सरहिंद के सूबे ने कैद कर लिया। दादी मां और छोटे साहिबज़ादों को ठंडे बुर्ज में रखा गया। सारी रात दादी मां उन्हें दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बलिदान के बारे में तथा अन्य शहीदों के संबंध में बताती हुई प्रेरणा देती रहीं कि आप ने अपने धर्म पर अडिग रहना है। चाहे कोई कितना भी दंड दे, आप लोगों ने डगमगाना नहीं है। छोटे साहिबज़ादों को सरहिंद सूबे के दरबार में पेश किया गया और कई प्रकार के लालच दिए गए। सरहिंद के नवाब ने उन्हें दीवार में चिनने का हुक्म दे दिया। सब लोग चुप थे, लेकिन मलेरकोटला के नवाब ने इस बात का विरोध किया, मगर जालिम वजीर खान ने काजी की मदद से साहिबजादों को दीवार में जिंदा चिन देने का आदेश दे दिया। साहिबजादों को जीवित ही दीवार में चिन दिया गया। माता गुजरी जी भी प्रभु-चरणों में विराजमान हो गईं। आज भी वह पुरानी ईंटों की दीवार गुरुद्वारा फ़तहिगढ़ साहिब में मौजूद है। वहां हर वर्ष १३ पौष को बहुत भारी शहीदी जोड़-मेला लगता है।

*१०५-सी, प्रोफेसर कालोनी, सामने पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला-१४७००२; फोन : ९४६३६-१८९११

माता गुजरी जी

-डॉ. जगजीत कौर*

विश्व-धर्मों के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए यदि मातृ-शक्ति के योगदान की भूमिका के सन्दर्भ में देखें तो माता गुजरी जी की समानता का व्यक्तित्व प्राप्त होने नितान्त असंभव है। माता गुजरी जी की शख्सियत अपने आप में दुर्लभ, अनूठी, विलक्षण, अनुपम और अतुलनीय है। माता गुजरी जी दया, धर्म, प्रेम, त्याग, संयम, धैर्य, ममता और सहनशीलता का मुजसमा थीं। ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व की स्वामिनी माता गुजरी जी का जन्म करतारपुर (जलंधर) निवासी भाई लाल चंद जी तथा माता बिशन कौर जी के घर सन् १६२७ ई. में हुआ। लम्बा कद, तीखे नैन-नक्श, हंसमुख चेहरा, मधुर वाणी, सहज अवस्था को प्राप्त, विनम्रता और बड़े बुजुर्गों के प्रति शालीनता और सम्मान-भावना से ओत-प्रोत थीं। विवाहोपरान्त आप अधिकांश समय अपनी सास माँ माता नानकी जी के साथ रहीं और उनके पूर्ण स्नेह और प्रेम की पात्र बनी रहीं।

माता गुजरी जी का विवाह मीरी-पीरी के मालिक, छठे गुरुदेव श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ करतारपुर में सम्पन्न हुआ। भाई लालचंद जी और माता बिशन कौर जी गुरु-घर के अत्यन्त श्रद्धालु, भक्ति-भाव से पूर्ण धार्मिक प्रवृत्ति के थे। जब माता गुजरी जी की बिदाई होने लगी तो माता बिशन कौर जी ने पुत्री के सिर पर हाथ फेरते हुए उन्हें प्यार से समझाया, ''बेटी गुजरी! पति को परमेश्वर रूप जान उनकी सेवा करना। इस सेवा के बराबर अन्य कोई सेवा नहीं। इसी में सुख मिलता है।'' गुर बिलास पातशाही दसवीं के अनुसार माता बिशन कौर जी ने समझाया :

पति सम ईस पछान कै हे पुत्री कर सेव।
पति परमेशर जानीऐ और तुच्छ लख एव।

माता-पिता दोनों ने बिदाई के समय अकाल पुरख के चरणों में अरदास की, ''हे सतिगुरु जी! हम गरीबों की लाज रखना। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के घर से हमेशा हमें शुभ समाचार ही मिलते रहें। कभी कोई अप्रिय संदेश न आए।'' ऐसा ही हुआ। माता गुजरी जी ने गुरु-घर के सभी प्राणियों का मन अपने मधुर स्वभाव और विनम्र व्यवहार से जीत लिया। साहस और दलेरी तो इनमें असीम दर्जे की भरी थी। अभी विवाह को कुछ ही दिन हुए थे कि करतारपुर का जंग छिड़ गया। श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस जंग में शमशेर के वो करिश्मे दिखाए कि श्री गुरु

*१८०१-सी, मिशन कंपाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर-२४७००१, फोन : ९४१२४-८०२६६

हरिगोबिंद साहिब ने इनका पहला नाम 'तिआग मल्ल' बदल कर 'तेग बहादर' रख दिया। दूसरी ओर जैसा कि प्रिंसिपल सतिबीर सिंघ 'इति जिन करी' पुस्तक में लिखते हैं कि ''माता गुजरी जी करतारपुर घर की छत पर चढ़कर युद्ध के करिश्मे देख रही थीं और अपनी नवविवाहिता चूड़े वाली बांह हिला-हिला कर श्री गुरु तेग बहादर जी को उत्साहित भी कर रही थीं। साहसी वे बालपन से ही थीं।''

जब १६४४ ई. में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब परम ज्योति में समाए तो उससे पहले अपने बड़े सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र श्री गुरु हरिराय जी को गुरुता गद्दी प्रदान की। माता नानकी जी को श्री गुरु तेग बहादर जी संग बकाला चले जाने का आदेश दिया, यह कहकर कि समय भयानक आने वाला है और श्री गुरु तेग बहादर जी को उस भयानकता का सामना करने के लिए तैयार करना है। माता नानकी जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब और माता गुजरी जी सहित बकाला आ गईं। बकाला माता नानकी जी का मायका था और श्री गुरु तेग बहादर जी का ननिहाल। यहां श्री गुरु तेग बहादर जी ने माता गुजरी जी से कहा कि वे ज्यादा समय प्रभु-चिंतन में रत रहना चाहते हैं। माता गुजरी जी ने इसे सहर्ष स्वीकार किया। एक प्रार्थना की कि आप आराधना में लीन रहें। बस, आपके दर्शन होते रहें, यही मेरा संतोष है।

सन् १६६४ ई. में जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली में ज्योति-जोत समाने से पहले 'बाबा बकाला' संकेत दिया और भाई मक्खण शाह लुबाणा ने 'गुरु लाधो रे!' कह कर गुरु साहिब को गुरु रूप में प्रकट किया और दिल्ली से आए हुए सिक्खों ने श्री गुरु तेग बहादर जी के गुरु रूप में पहली बार दर्शन किए, तब भी माता गुजरी जी अति सहज-शान्त भाव से गुरु और संगत की सेवा में लगे रहे। मन में किसी प्रकार का अहंकार नहीं आने दिया। विनम्रता की पुंज बनी रहीं। माता गुजरी जी की प्रभु-भक्ति औऱ दृढ़ इच्छा-शक्ति का वर्णन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'बचित्र नाटक' में इस प्रकार किया है :

तात मात मुर अलख अराधा ॥
बहु बिधि जोग साधना साधा ॥३ ॥
तिन जो करी अलख की सेवा ॥
ता ते भए प्रसंन गुरदेवा ॥. . .४ ॥५ ॥

विवाह के कई वर्ष पश्चात माता गुजरी जी को अद्वितीय वीर योद्धा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मां होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय माता गुजरी जी श्री गुरु तेग बहादर जी से दूर पटना साहिब में अपने भ्राता भाई किरपाल चंद और सास मां माता नानकी जी के साथ रहीं। श्री गुरु तेग बहादर जी आसाम, बंगाल-ढाका नानक-मत की प्रचार-फेरी पर थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म के समय गुरुदेव ढाका में थे। माता गुजरी जी की सहज, स्थिर अवस्था का उदाहरण है कि पति गुरुदेव से दूर वे संगत की सेवा में बालक का पालन-पोषण पूर्ण

सावधानी से कर रही थीं; श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की वीरोचित भाव से देखरेख कर रही थीं।

वर्षों बाद जब श्री अनंदपुर साहिब परिवार के सुखमय वातावरण में रहने का समय आया तो विधि का विधान कुछ और ही योजना बना रहा था। मुगल बादशाह औरंगजेब के अत्याचार बढ़ रहे थे। हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया जा रहा था। कश्मीर के पंडित समाज से यह अभियान जोर-शोर से चला। कश्मीर के पंडित कृपा राम की अगुआई में दल बांध ब्राह्मण श्री गुरु तेग बहादर जी की शरण में आए। प्रार्थना की कि वे ही ऐसे महान पुरुष हैं जो हिंदू धर्म की रक्षा कर सकते हैं और जालिम औरंगजेब का सामना कर सकते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का दर शरणागत की रक्षा करने को तत्पर रहता है, तभी तो मटन निवासी पंडित कृपा राम बाकी ब्राह्मणों को साथ लेकर गुरु-घर आया। उस समय भी हिंदू धर्म के अनेक पीठ प्रसिद्ध थे, मठ भी थे, आश्रम भी थे। श्री गुरु तेग बहादर जी के पास ही क्यों आए, क्योंकि मटन के पंडितों को श्री गुरु नानक-काल से ही विदित था कि तिलक-जनेव में आस्था न होते हुए भी तिलक-जनेव की रक्षा करने का यदि सामर्थ्य है तो केवल सिक्ख गुरु साहिबान में ही है। श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धांत जबरन धर्म-परिवर्तन का विरोध करते हैं, मानवता के भ्रातृ-भाव और आज़ादी का पक्ष-समर्थन करते हैं। मटन के पंडितों का श्री गुरु नानक देव जी की चरण-धूलि प्राप्त कर विश्वास दृढ़ हो चुका था कि श्री गुरु नानक-पंथ के सूत्रधार ही उन्हें संकट से बचा सकते हैं। माता गुजरी जी भली-भांति जानती थीं कि औरंगज़ेब को पंडितों के माध्यस से संदेश भेजने का अर्थ क्या है? परिणाम क्या होगा? फिर भी शान्त, सहज-भाव से उन्होंने पति गुरुदेव जी को दिल्ली के लिए रवाना कर दिया। विश्व-इतिहास की महान अचंभित कर देने वाली घटना घटित हुई, जिसे 'बचित्र नाटक' में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वर्णित किया है:

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥. . . ॥३ ॥५ ॥

गुरुदेव जी का मुगल सत्ता की जालिमाना शक्ति के द्वारा शीश धड़ से अलग कर दिया गया। दिल्ली चांदनी चौक में गुरुदेव जी को शहीद किया गया जहां अब 'गुरुद्वारा सीसगंज साहिब' सुशोभित है। भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दिआला जी को गुरुदेव से पूर्व उनके सामने शहीद किया गया। श्री गुरु नानक देव जी के सिक्ख अदम्य उत्साह और साहस रखते हैं। अति सत्कार, सम्मान सहित भाई जैता जी (भाई जीवन सिंघ जी) आंधी-तूफान भरे माहौल में पावन शीश कपड़ों में लपेट कर भाग निकले और श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे, जहां माता गुजरी जी ने पुनः अति संयम की मिसाल पेश

करते हुए पति गुरुदेव के पावन शीश को अपने हाथों में लिया, मुख पोछा, शीश झुकाया और धैर्यपूर्वक कहा, ''पति गुरुदेव! आपने अपने फर्जों को भली-भांति अदा किया है, मुझे भी बल प्रदान करें कि मैं भी अपने फर्जों को भली-भांति अदा कर सकूं और आपके बलिदान को सार्थक सिद्ध कर सकूं।'' पावन शीश का आदर सहित श्री अनंदपुर साहिब में दाह-संस्कार किया गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जैता जी को गले लगाया, आशीर्वाद दिया, 'रंघरेटे, गुरु के बेटे'। उधर दिल्ली में गुरु जी के धड़ को अंधड-तूफान में बचाते हुए भाई लक्खी शाह वणजारा और उनका बेटा भाई नगाहीआ अपने गड्डे (बैलगाड़ी) में लदी रुई के ढेर में छुपा कर अपनी झोपड़ी में पहुंचे। आदर सहित धड़ को धो-पोंछ कर झोपडी को आग लगा दी और जब धड़ लगभग अग्नि-दाह हो चुका तो शोर मचाने लगे, ''हमारी झोपड़ी में आग लग गयी!'' यहां अब 'गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब' सुशोभित है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस समय नौ वर्ष की अवस्था के थे। हम सहज अनुमान लगा सकते हैं कि उन्हें वीर शक्तिशाली गुरु-शख्सियत बनाने में माता गुजरी जी का कितना बड़ा योगदान रहा होगा। साहिबजादों को उचित गुरमति शिक्षा से परिपक्व करने, श्री अनंदपुर साहिब के वासियों एवं सिक्ख संगत को उचित निर्देश देने में माता गुजरी जी की अति सक्रिय भूमिका रही। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में किले बनाये, कौम का सैनिक संगठन किया, शस्त्र-संचालन में पारंगत किया; संत-सिपाही खालसा पंथ की साजना की। सन् १६९९ की वैसाखी के दिन खंडे-बाटे द्वारा तैयार अमृत छक कर खालसा रूप अस्तित्व में आया। रणजीत नगाड़े बजे। युद्ध की दुंदभियां, भेरिआं बजने लगी। इन सब में माता गुजरी जी का पर्याप्त योगदान रहा। यही नहीं, जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे का अमृत तैयार किया तो माता गुजरी जी अपने पोतों— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी को अमृत छका कर खालसा पंथ में शामिल किया। बाबा अजीत सिंघ जी की आयु उस समय तेरह साल की और बाबा जुझार सिंघ जी की आयु नौ-दस साल की थी। माता सुंदरी जी ने कहा कि ''अभी बच्चे छोटे हैं।'' माता गुजरी जी ने कहा कि ''शेर के बच्चे शेर ही होते हैं। उनकी आयु नहीं देखी जाती।''

दादी मां के रूप में वे अपने पोतों के लिए हमेशा प्रेरणा-स्रोत रहीं। गुरमति और सिक्ख विचारधारा को निरंतर दृढ़ करवाती रहीं। जब बाबा अजीत सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब की पहली जंग जीत कर आए तो माता गुजरी जी ने उन्हें गले से लगा कर अनेक आशीर्वाद दिए। माता जीतो जी के प्रभु-चरणों में समा जाने के बाद साहिबजादों को माता गुजरी जी ने ही

मातृवत् ममता-प्यार देकर उनका पालन-पोषण किया। साहिबजादों को ममतामयी लोरियां ही नहीं उन्हें गुरु-घर की साखियां भी सुना कर, गुरबाणी का नियमित अभ्यास करवा कर गुरमति में परिपक्व करती रहीं। उनका विशाल उदार हृदय सबके लिए ममता, प्यार, दया से भरा हुआ था। जब मसंद भटक गए, भ्रष्टाचारी हो गए, तब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भटके हुए मसंदों को ठीक रास्ते पर लाने के लिए दंडित करना शुरू किया। इन्हीं में एक मसंद बखत मल था, जो काबुल और कंधार से कार-भेटा इकट्ठी कर लाया करता था। वह भ्रष्ट हो गया था। चतुर-चालाक मसंद माता गुजरी जी के पास आ गया। हाथ जोड़ विनम्र प्रार्थना की, ''माता जी, मैं आपकी शरण में आया हूँ। मुझे किसी तरह बचा लीजिए। इस बार गलती की है आगे से नहीं करूंगा। गुरु जी इस बार मुझे क्षमा कर दें!'' माता जी ने गुरु साहिब को कहकर उसे क्षमा करवा दिया।

माता जी का हृदय अत्यन्त दयालु था और शरणागत की लाज रखने वाला था। जब श्री अनंदपुर साहिब की अंतिम बड़ी लड़ाई में श्री अनंदपुर साहिब को मुगलों और पहाड़ी राजाओं की सम्मिलित सेना ने आठ महीने घेरे रखा तो किले में अन्न-पानी-खाद्य पदार्थों की कमी हो गई। कुछ सिक्ख हिम्मत हार बैठे। माता गुजरी जी के पास आए कि वे गुरु साहिब पर जोर डालें कि किला खाली कर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दिया जाये। उनके कहने पर माता जी ने गुरु जी से किला खाली करने को कहा। गुरु जी को भविष्य का एहसास था कि मुगलों और पहाड़ियों की कसमें व्यर्थ हैं, फिर भी उन्होंने किला छोड़ने का मन बना लिया। जैसे ही काफिला सरसा नदी के तट तक पहुंचा, दुश्मन की फौज ने अचानक हल्ला बोल दिया। दिसंबर मास की शीत भरी रात्रि, सरसा नदी का उफनता पानी, फिर भी बाबा अजीत सिंघ जी, भाई उदै सिंघ जी ने मुगलों का डटकर सामना किया। कई सिंघ नदी के बहाव में डूब गए। कीमती सामान डूब गया। परिवार बिछड़ गया। माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी भाई मनी सिंघ जी के साथ अंबाला-दिल्ली की ओर चले गए। बड़े दो साहिबज़ादे और गुरु जी वैरियों के दांत खट्टे करते हुए रोपड़ की ओर बढ़ गए और चमकौर साहिब पहुंचे। छोटे साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी, माता गुजरी जी के साथ सरसा के दूसरे किनारे आ गए। साथ में गंगू रसोईया था। वह उन्हें अपने गांव सहेड़ी ले आया। रात माता जी ने पोतों सहित गंगू के घर पर गुजारी। माता जी के पास गहने और मोहरों की भरी थैली थी, जिस पर गंगू की बुरी नज़र पड़ गई। उसने रात वो सामान चुरा लिया। प्रातः माता जी की आंख खुली, देखा, थैली नहीं है। प्यार से गंगू से पूछा, ''बेटा गंगू! जेवरों-मोहरों की थैली कहीं संभाल कर रखी है

क्या?'' गंगू भड़क उठा, ''मुझे चोर बता रही हैं आप! एक तो मैंने अपने घर पर सहारा दिया, उलटा मुझे ही चोर बता दिया।'' माता जी ने बहुत समझाया, ''नहीं बेटा, मैं तुम्हें चोर क्यों कहूंगी?'' गंगू की नीयत बदल गई थी। इनाम के लालच में वह मोरिंडा के कोतवाल के पास पहुंच गया। कोतवाल छोटे साहिबजादों और माता गुजरी जी को गिरफ्तार कर वजीर खान के पास ले गया। उसने उन्हें सरहिंद के ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। भयानक शीत रात्रि, ऊपर से वस्त्र भी नहीं। भूखे-प्यासे तीन दिन कैद में रखा। इस बीच भाई मोती राम महिरा चौकीदारों से छिपता-छुपाता दूध और परशादे लेकर माता जी के पास आया। माता जी ने उसे प्यार भरा आशीर्वाद दिया। वह तीन दिन दूध-परशादे लाता रहा। पकड़ा गया। उसके सारे परिवार को वजीर खान ने कोल्हू में पेर कर शहीद कर दिया।

माता गुजरी जी आने वाले समय से आशंकित थीं। वे पूरी रात बच्चों को अपनी छाती से लगा कर उन्हें वीर पुरुषों की साखियां सुनाती रहीं। उन्हें बताती रहीं कि ''उनके दादा श्री गुरु तेग बहादर जी ने शीश-दान दिया, मगर धर्म नहीं छोड़ा। श्री गुरु अरजन देव जी गर्म तवी पर बैठ शहादत प्राप्त कर गए, लेकिन अपने आदर्शों से नहीं डिगे। तुम वीर बहादुर पिता की संतान हो, धर्म पर अडिग रहना। दादा जी की पगड़ी पर दाग नहीं लगने देना।'' बच्चों ने दादी मां की नसीहतों पर पूरा अमल किया। उन्हें वजीर खान की कचहरी में पेश किया गया। उन्होंने जाते ही 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलंद आवाज में बुलाई। वजीर खान का रोम-रोम कांप उठा। उसने अनेक प्रकार से साहिबजादों को प्रलोभन दिए, पर साहिबजादे धर्म पर अडिग रहे। अंत में उन्हें दीवार में जिंदा चिन देने का फतवा दिया गया। दीवार अभी छाती तक पहुंची थी कि साहिबजादे बेहोश हो गिर पड़े। उन्हें बेहोशी की हालत में दीवार से निकाल भूमि पर लिटा दिया गया। शाशल बेग और बाशल बेग दो जल्लादों ने उन्हें अपने घुटनों के नीचे दबाकर गले रेत कर शहीद कर दिया।

कितना भयानक अत्याचार था! माता गुजरी जी इस गहरे सदमे से आहत होकर ठंडे बुर्ज में ही परम ज्योति में विलीन हो गईं। एक अच्छी मां, पत्नी, सास, दादी मां की भूमिका निभाते हुए सिक्ख इतिहास में श्रद्धा की पात्र बनी। दीवान टोडर मल्ल ने बड़ी संख्या में मोहरें अदा कर दाह-संस्कार हेतु भूमि खरीदी और साहिबजादों एवं माता गुजरी जी का दाह-संस्कार किया। यहां अब 'गुरुद्वारा जोती सरूप साहिब' सुशोभित है फतिहगढ़ साहिब में। तन-मन को कंपायमान कर देने वाली इतिहास की यह काली घटना दिसंबर, १७०४ ई. में घटित हुई। धन्य हैं माता गुजरी जी! नारी-जगत के लिए प्रकाश-स्तंभ! अद्वितीय आदर्श! रोल मॉडल!

रंघरेटे गुरु के बेटे : भाई जीवन सिंघ जी

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल' *

भाई जैता जी नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी एवं दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परम प्रिय सिक्खों में से एक थे। भाई साहिब नवम् पातशाह की शहादत के समय गुरु जी के पास थे और शहादत के बाद गुरु जी का शीश लेकर दशमेश पिता के पास श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे थे। बाद में आप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के 'सिंघ' सजकर भाई जीवन सिंघ बन गये। आपने अनेक युद्धों में भाग लिया और अंततः चमकौर के युद्ध में शहादत प्राप्त की।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : भाई जीवन सिंघ जी के पिता का नाम भाई सदा नंद जी और माता का नाम माता प्रेमो जी था। भाई सदानंद जी और माता प्रेमो जी बहुत पहले से ही गुरु-घर के श्रद्धालु थे। यह दम्पति लम्बे समय से नवम् पातशाह की सेवा करता चला आ रहा था। जव नवम् पातशाह बकाला गांव में निवास करते थे तब भी ये दोनों गुरु जी के साथ थे और तन-मन से गुरु साहिब की सेवा में लगे रहते। नवम् पातशाह जब गुरगद्दी पर सुशोभित हुए तब भाई सदानंद जी और माता प्रेमो जी गुरु जी के साथ श्री अनंदपुर साहिब आ गये।

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी धर्म-प्रचार यात्रा के लिए जब उत्तर-पूरब की ओर गये तो भाई सदानंद जी और माता प्रेमो जी भी सेवा-कार्य के लिए साथ ही हो लिये। यात्रा के दौरान पटना साहिब में ही भाई जीवन सिंघ जी का जन्म हुआ। आपका नाम 'जैता' रखा गया। भाई जैता जी दशमेश पिता से उम्र में थोड़े बड़े थे। पटना साहिब में ही बाद में श्री दशमेश पिता का प्रकाश हुआ था।

पटना साहिब में ही भाई जैता जी के छोटे भाई का जन्म हुआ, जो भाई संगत सिंघ नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् १६७१-७२ ई. में जब नवम् पातशाह सपरिवार श्री अनंदपुर साहिब वापिस आये तो भाई जैता जी का परिवार भी गुरु जी के साथ वापिस आ गया।

नवम् पातशाह की शहादत और भाई जीवन सिंघ जी की बहादुरी : नवंबर, १६७५ ई. में जब नवम् पातशाह कश्मीरी पंडितों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु दिल्ली गये तो साथ गये सिक्खों में भाई जैता जी भी शामिल थे। भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी की शहादत के बाद नवम् पातशाह ने दिल्ली के चांदनी चौक में शहादत प्राप्त की। जालिमों द्वारा गुरु जी को शहीद किये जाने के बाद गुरु जी के शीश और देह को वहीं पड़ा रहने दिया गया। औरंगजेब को भ्रम था कि गुरु जी की

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

देह को उठाने कोई सिक्ख नहीं आयेगा। ऐसे में भाई जैता जी ने ग़ज़ब की बहादुरी दिखाई। आप भरे पहरे में से नवम् पातशाह के शीश को उठा लाये और श्री अनंदपुर साहिब जा पहुंचे । गुरु जी की देह को भारी कीमत चुकाकर भाई लक्खी शाह अपने घर ले गये और अपने घर में आग लगाकर गुरु जी की देह का दाह-संस्कार किया।

भाई जैता जी जब श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे तो दशमेश पिता ने गुरु-पिता का शीश देखा। गुरु जी ने भाई जैता जी को गले से लगा लिया। भाई जैता जी के अद्भुत साहस से प्रसन्न होकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'रंघरेटे-गुरु के बेटे' कहकर भाई साहिब को सम्मानित किया। बाद में नवम् पातशाह के शीश का दाह-संस्कार श्री अनंदपुर साहिब में ही किया गया ।

भाई जीवन सिंघ जी का युद्ध-कौशल : भाई जैता जी अत्यंत सुंदर, ऊँचे कद के और मज़बूत डील-डौल वाले थे। आपको युद्ध-कला एवं शस्त्र-संचालन विशेष प्रिय थे। आप गुरु जी की सेना के महत्वपूर्ण सिपहसालार थे। भाई साहिब ने दशमेश पिता द्वारा लड़े गये हर युद्ध में भाग लिया और प्रत्येक युद्ध में ग़ज़ब की बहादुरी दिखाई।

भाई जैता जी से भाई जीवन सिंघ जी : भाई जैता जी अपने माता-पिता के समान निरंतर गुरु जी की सेवा में लगे रहते। सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन जब दशमेश पिता ने 'खालसा-पंथ' की सृजना की तो भाई जैता जी ने भी अमृत-पान किया और 'सिंघ' सजकर भाई जैता जी से भाई जीवन सिंघ जी बन गये। इसके बाद युद्धों में आप गुरु जी के नेतृत्व में विशेष बहादुरी दिखाते रहे।

चमकौर की जंग में शहादत : मार्च, १७०४ ई. में लाहौर एवं सरहिंद के सूबेदारों और पहाड़ी राजाओं की सम्मिलित फौज ने श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया। सिक्ख लगातार संघर्ष करते रहे। घेरा अंतत: आठ महीने तक खिंच गया। दशमेश पिता सिक्खों के बार-बार आग्रह करने पर और शत्रु के आश्वासनों पर विश्वास कर रात को परिवार एवं साथी सिंघों सहित श्री अनंदपुर साहिब छोड़कर निकले। इन सिक्खों में भाई जीवन सिंघ जी भी शामिल थे।

धोखेबाज़ शत्रु ने सरसा नदी पार कर रहे गुरु जी के काफिले पर भयानक आक्रमण कर दिया। माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे परिवार से बिछड़ गये। गुरु जी बड़े साहिबज़ादों और चालीस सिंघों के साथ चमकौर साहिब पहुंचने में सफल हो गये। भाई जीवन सिंघ जी गुरु जी के साथ थे।

चमकौर साहिब के एक प्रेमी सिक्ख चौधरी भाई बुधीचंद ने गुरु जी से आग्रह किया कि वे उसकी हवेली (गढ़ी) में आ जायें, ताकि सुरक्षित ढंग से शत्रु का सामना किया जा सके। गुरु जी ने आग्रह मान लिया। पीछा कर रहे मुगल लश्कर ने शीघ्र ही हवेली को आ घेरा।

भयानक जंग छिड़ गई। सिंघ पांच-पांच के जत्थे में हवेली के दरवाज़े पर जा डटते और आखिरी दम तक शत्रुओं को धराशायी करते हुए

शहीद हो जाते। गुरु जी हवेली की छत पर मोर्चा बांधे तीरों की वर्षा कर रहे थे। गुरु जी ने मुगल सिपहसालार नाहर खान तथा गैरत खान को मार गिराया और मुहम्मद मरदूद को जख्मी कर भगा दिया।

इस युद्ध में बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी तथा पांच प्यारों में से तीन प्यारे— भाई मोहकम सिंघ जी, भाई हिंमत सिंघ जी और भाई साहिब सिंघ जी शहीद हो गये।

महज चालीस सिंघों की बहादुरी के कारण लाखों का लश्कर दिन भर लड़कर भी हवेली पर कब्ज़ा नहीं कर सका। पांच सिंघों के हुक्म को मानकर दशमेश पिता शेष दो प्यारों— भाई दया सिंघ जी और भाई धरम सिंघ जी के साथ खालसे को पुनर्गठित करने हेतु गढ़ी से निकल गये ।

शत्रु को भ्रम में रखने के लिए भाई संगत सिंघ जी ने गुरु जी जैसा रूप बना लिया और अंत तक जूझकर शहीदी प्राप्त कर गये।

भाई जीवन सिंघ जी चालीस शहीद सिंघों में शामिल थे। भाई साहिब ने अप्रतिम बहादुरी दिखाई और लाखों के लश्कर से टकराते हुए शहादत प्राप्त की।

भाई बुधीचंद की गढ़ी के स्थान पर अब 'गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब' सुशोभित है, जो भाई जीवन सिंघ जी एवं अन्य सिंघों की शहीदी की गौरव-गाथा सुना रहा है।

कविता

रंघरेटे गुरु के बेटे —भाई जीवन सिंघ जी

-श्री रमेश बग्गा चोहला*

करके हौसला बड़ा तुम, कर्म कमाया सिक्खी का।
रंघरेटे गुरु के बेटे तुम, मान बढ़ाया सिक्खी का।
हिम्मत करके नवम् पिता का, शीश उठा लिया तुम।
साथ अदब के अपनी छाती, संग लगा लिया तुम।
जान हथेली पर रख के तुम, फर्ज निभाया सिक्खी का।
रंघरेटे गुरु के बेटे तुम, मान बढ़ाया सिक्खी का।
औरंगजेब का सपना तुम, कर चकनाचूर दिया।
भ्रम पाला था जो उसने, कर उसको दूर दिया।
पा के दुख-तकलीफें तुम, भला चाहा सिक्खी का।
रंघरेटे गुरु के बेटे तुम, मान बढ़ाया सिक्खी का।
तुम्हारा यह उपकार कभी, नहीं भुलाया जाएगा।
सिक्ख इतिहास के पन्नों पर, सदा दिखाया जाएगा।
'चोहला' कहता सच्चा तुम, हो सरमाया सिक्खी का।
रंघरेटे गुरु के बेटे तुम, मान बढ़ाया सिक्खी का।

*१३४८/१७/१, गली नं. ८ ऋक्षि नगर एकसटेंशन, लुधियाना-१४१००१; फोन: ९४६३१३२७१९

चमकौर की गढ़ी के शहीद : भाई संगत सिंघ

–स. तरलोचन सिंघ*

सूर्य अस्त होने पर जब चमकौर की जंग बंद हुई तो गढ़ी में गिनती के ११ सिंघ रह गए थे, जिनमें शहीद पिता का सुपुत्र और शहीद सुपुत्रों का बाप जंग में जूझने के लिए तैयार-बर-तैयार था। सिंघों के विनती करने पर गुरु साहिब ने गढ़ी छोड़ जाने का पांच प्यारों का फैसला स्वीकार कर लिया, क्योंकि सिंघ यह समझते थे कि यदि गुरु साहिब का शारीरिक अस्तित्व कायम रहा तो ये कठिन समय के लिए फिर से सिक्ख कौम संगठित कर लेंगे। सिंघों के अनुसार गुरु साहिब की असमय शहादत कौम के लिए बहुत दुखदायक होगी, इसलिए गढ़ी वाले सिंघों ने गुरु साहिब को १७५६ बिक्रमी की वैसाखी पर श्री अनंदपुर साहिब में अमृत छकाते समय खालसे को दी महानता के अंतर्गत विनम्रता सहित मुखातिब होकर चमकौर की गढ़ी छोड़ जाने की विनती की। पंथ के वाली ने पांच सिंघों की इस विनती को स्वीकार कर लिया। गुरु पातशाह ने खालसा पंथ को ऐसी महानता प्रदान कर आलौकिक इतिहास सृजित कर दिया कि अपने बचपन के हमशक्ल साथी और हमउम्र भाई संगत सिंघ, जो हर वक्त विनम्र होकर गुरु-घर की सेवा में लगे रहते थे, को प्यारे सिक्ख होने का सम्मान बख्शिश कर सीने से लगाया और अपनी कलगी उनके शीश पर सजाई; अपने शस्त्र-वस्त्र उनको बख्शिश किए और प्रोत्साहन दिया। इसका जिक्र 'गुरबिलास पातशाही १०' के कर्त्ता भाई कुइर सिंघ ने इस तरह किया है :

. . . पुनि दी कलगी और जिगा सुखदानी।
संगत सिंघ है नाम जिसै कछु ता बपु है करि श्री गुर सानी।

''भाई संगत सिंघ! आपने मेरे बाद मेरी पोशाक में मेरे मोर्चे वाले आसन पर बैठना और सूर्योदय के वक्त जब मुगल फौज गढ़ी पर हमला करे तो शत्रु का डट कर मुकाबला करना, जीते-जी शत्रु के हाथ नहीं लगना और मैदाने-जंग में शत्रु के साथ जूझते हुए शहादत प्राप्त करनी है। जंग की बाबत आप जी का फैसला 'जफ़रनामा' के शेयर २२ में इस तरह है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत॥

नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहलूर के राजा से पांच मील उत्तर-पश्चिम दिशा में गांव माखोवाल की ज़मीन खरीदी, जो सतलुज दरिया के किनारे पर थी। वहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने 'श्री अनंदपुर साहिब' नाम का नगर बसाया, जिसकी नींव रखने का शुभ कार्य बाबा बुड्ढा जी के पोते बाबा गुरदित्ता जी ने संपूर्ण किया। माखोवाल का नाम पहले 'चक्क नानकी' और बाद में 'श्री अनंदपुर साहिब' प्रसिद्ध हुआ। यहीं पर भाई रणीआ जी और बीबी अमरो जी ने गुरु साहिब की

*गांव : रुड़का खुर्द, तहसील : फिलौर, ज़िला : जलंधर, फोन : ९८१५२-२८२२०

सेवा में अपना जीवन लगाया। यहां से बीबी अमरो जी और भाई रणीआ जी ने सिक्खी के प्रचार के लिए धर्म प्रचार-यात्रा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की रहनुमाई में आरंभ की, जिसमें माता नानकी जी, माता गुजरी जी, मामा किरपाल चंद, दीवान दुरगा मल्ल, भाई दुरगा दास आदि के साथ-साथ बीबी अमरो जी और भाई रणीआ जी भी गुरु-घर के सेवक के रूप में शामिल थे। प्रचार के रूप में मालवा देश के बांगर इलाके— मथुरा, कुरुक्षेत्र, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद आदि अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए पटना साहिब (बिहार) पहुंचे, जहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपने परिवार और गुरु की संगत, जिसमें भाई रणीआ जी तथा बीबी अमरो जी भी शामिल थे, को सेवा-संभाल की जिम्मेदारी सौंप कर ढाका-आसाम देशों के दौरे पर चले गए थे। पटना साहिब में ही गुरु साहिब की बख्शिश का सदका दशम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म (प्रकाश) २३ पौष, १७२३ बिक्रमी से चार महीने बाद बीबी अमरो जी की कोख से भाई रणीआ जी के घर भाई संगत सिंघ का जन्म २८ वैसाख, १७२४ बिक्रमी को हुआ। माता-पिता ने आप जी का नाम 'संगता' रखा।

ज्ञानी गुरबखश सिंघ अपनी पुस्तक 'कलगी भाई संगत सिंघ नूं ही' में लिखते हैं कि ''बाबा (भाई) संगत सिंघ के पूर्वज पुराने जमाने के जलंधर सूबे के गांव खेड़ी (फगवाड़ा के निकट) के रहने वाले थे, जिनके पूर्वज पहले बंगा में रहते थे, जिस कारण खेड़ी के निवासी आपको 'बंगेसर' उपमान से पुकारते थे।''

इतिहास को पढ़ने के पश्चात पता चलता है कि ''खेड़ी सपरोड़ की दिल दहला देने वाली एक घटना को बड़ी हिम्मत के साथ ही सुना जा सकता है। आस-पास के गांवों से भी इस बात की गवाही मिलती है कि खालसा पंथ की सृजना के समय श्री अनंदपुर साहिब में इसी गांव के भाई रणीआ जी, भाई जोधा जी, जो हीर गोत्र के रामदासिए गुरसिक्ख थे और भाई भानूं जी के सुपुत्र थे, के परिवारों ने गुरु साहिब से अमृत की दात प्राप्त कर खालसा पंथ के साथ अपना पक्का सम्बंध जोड़ लिया था, जिसके विरोध में आकर औरंगज़ेब हुकूमत ने एक खास फतवा जारी किया कि इनकी जायदाद ज़ब्त कर इनको बागी करार दे दिया जाए। हुकूमत के सुपुर्द न करने की सूरत में गांव खेड़ी तहस-नहस करने का हुक्म दिया था। इस तरह खेड़ी गांव, जो ज़ालिम हुकूमत ने बेरहमी का शिकार बना कर उजाड़ दिया था, वो आज भी टीले की शक्ल में देखा जा सकता है।''

बाबा संगत सिंघ के खानदान के जो परिवार गांव खेड़ी से उजड़ कर आए थे, उनमें आज भी गांव रुड़का खुर्द, खोथड़ां, जंडाली, चक्क गुरू आदि गांवों में बाबा जी के खानदान से संबंधित बहुत-से गुरसिक्ख परिवार गुरु-पंथ की सेवा में हैं। जहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की संगत में जंडू सिंघा (जलंधर शहर) इलाके के भाई बुद्धा जी और भाई सुद्धा जी रामदासिए सिक्खों ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शरण में रह कर गुरु साहिब द्वारा लड़ी गई चारों जंगों में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाते हुए शत्रुओं को करारे हाथ दिखाए, वहीं दशम पिता

साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगत बन हृदय में इतिहास समोए बैठे रामदासिए सिक्खों और सिक्ख महिलाओं द्वारा की गई कुर्बानियों को भी इतिहास अपने सीने में संभाले बैठा है।

भाई रतन सिंघ लिखते हैं कि ''बड़े घल्लूघारे के समय अन्य बिरादरियों के साथ-साथ हज़ारों रामदासिए सिंघों ने भी शहादत प्राप्त की।'' इसी तरह प्रिं. सतिबीर सिंघ लिखते हैं कि ''सिक्ख राज्य स्थापित करने में रामदासिए सिंघों का विशेष योगदान है।'' इतिहास के पन्ने पढ़ने के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रामदासिए सिक्खों का इतिहास किस तरह कुर्बानियों से लबरेज़ है। इनमें से ही थे कौम के अनमोल रत्न भाई संगत सिंघ, जिन्होंने अपना जीवन शुरू से लेकर अंत तक दसम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों में रह कर गुज़ारा। छोटी उम्र में आपने अपना जीवन पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ हंस-खेल कर और बाल-लीला की क्रीड़ा के साथ गुरु साहिब की शरण में रह कर गुजारा। भाई संगत सिंघ ने शस्त्र-विद्या, निशानेबाज़ी, नेज़ेबाज़ी और घोड़ों की दौड़ में विशेष मुहारत हासिल की। फिर आप गुरु साहिब के साथ श्री अनंदपुर साहिब आ गए।

श्री अनंदपुर साहिब में १ वैसाख, १७५६ बिक्रमी को पांच प्यारों से भाई संगत सिंघ ने अमृत की दात प्राप्त की। आपके चाचा भाई जोधा जी और पिता भाई रणीआ जी, भाई मदन सिंघ, भाई काठा, भाई राम सिंघ और महिलाओं में बीबी दीप कौर अमृत छकने वालों में शामिल थे। बीबी दीप कौर वह बहादुर सिंघनी थी जिसने मुगलों का डट कर मुकाबला किया और गुरु साहिब की बहादुर एवं प्यारी बेटी होने का आशीर्वाद प्राप्त किया।

चमकौर की जंग से पहले भाई संगत सिंघ ने बसी कलां से साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी के साथ एक ब्राह्मण की पत्नी को मुगलों से छुड़वाने के साथ-साथ भंगाणी का युद्ध, अगंमपुरा की लड़ाई, सरसा की जंग में भी शूरवीरता का सबूत दिया था और फिर गुरु साहिब के आदेशानुसार मालवा में सिक्खी का प्रचार किया था, जिस कारण गुरु साहिब को भाई संगत सिंघ की वफादारी और शूरवीरता पर पूर्ण विश्वास था। भाई संगत सिंघ तैयार-बर-तैयार पूर्ण खालसा थे, जिस कारण गुरु साहिब की चयन रूपी बख्शिश भाई संगत सिंघ की झोली में पड़ी। ९ पौष, १७६१ बिक्रमी की सुबह जब मुगल फौज ने चमकौर की गढ़ी को घेरा डाला तो भाई संगत सिंघ द्वारा पहनी हुई गुरु साहिब वाली पोशाक और कलगी ने बार-बार मुगलों को गुरु साहिब होने का भ्रम पैदा किया। मुगल फौज भाई संगत सिंघ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी समझ कर तीरों की बौछार करती रही। भाई संगत सिंघ ने डट कर मुगलों का मुकाबला किया और कृपाण, तीरों तथा नेज़ों का प्रयोग कर मुगलों के छक्के छुड़ा दिए। ज़ख्मी होकर भी भाई संगत सिंघ अंत समय तक गुरु-फतह के जयकारे लगाते रहे और गुरु साहिब द्वारा दिए हुक्मों पर पूर्ण रूप से खरे उतरे। ज़ालिमों के विरुद्ध युद्ध के लिए गुरु साहिब के फलसफे पर चलते हुए दुश्मनों के साथ चमकौर की अद्वितीय जंग लड़ कर गुरु-आशय को सरअंजाम देकर ९ पौष, १७६१ बिक्रमी को शहीद हो गए।

गुरु-घर के अनन्य सेवक भाई नूरा माही जी

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

गुरु-घर के प्रति श्रद्धा, आस्था और निष्ठा रखने वालों में प्रत्येक धर्म, जाति, वर्ग के लोग शामिल रहे हैं और हैं। दरअसल ऐसे निष्ठावान तथा सुहृदय, समर्पित गुरु-प्रेमियों की न तो कोई जाति होती है और न ही कोई धर्म या वर्ग होता है। वे कट्टरवाद, सांप्रदायिकता, मज़हबी जुनून, नस्लीय भेदभाव आदि की बंदिशों में बंधे हुए नहीं होते। सिक्ख गुरु साहिबान के महान् फलसफे, विचारधारा, सिद्धांतों, कुर्बानियों, परोपकारी कार्यों और जीवन से प्रेरणा व आगवानी लेकर अनेक अनन्य सच्चे श्रद्धालु एवं सेवक हुए हैं, जिन्होंने सच्चे मन, तन व धन से गुरु साहिबान व गुरु-घर की सेवा कर अपना जीवन सफल बनाया है; इतिहास के पन्नों पर अपना नाम लिखवाया है। हां, कुछेक ऐसे भी गुरु-घर के अनन्य सेवक हुए हैं, जिनके बारे में अभी और जानकारी जुटानी शेष है। इनमें से एक नाम भाई नूरा माही जी का भी है। भाई नूरा माही जी से संबंधित अब तक जो जानकारी जुटाई जा सकी है, वह इस आलेख में पेश की जा रही है।

श्री चमकौर साहिब का युद्ध लड़ने के बाद और श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ते वक्त पारिवारिक बिछोड़ा पड़ने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माछीवाड़ा चले आए थे। भाई गनी खान तथा भाई नबी खान गुरु जी को 'उच्च का पीर' के रूप में माछीवाड़ा से आगे लेकर गये। उस समय गुरु जी ने नील-वस्त्र यानि नीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए थे। नीले रंग का अर्थ नीले आकाश की तरह बहुत गहरे चिंतन वाला होता है। गुरुओं, संतों, भक्तों, पीरों, फकीरों की कृपा नीले आकाश की भांति सब पर बनी रहती है। उनके हृदय में मानवता के लिए प्रेम व स्नेह नीले सागर जैसा विशाल तथा गहरा होता है, सबके लिए होता है।

आलमगीर से प्रस्थान करने के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रायकोट पहुंचे। यहां जंगल में भाई नूरा माही जी भैंसें चरा रहे थे। गुरु जी से भेंट कर वे गद्गद व भावविह्वल हो उठे। उन्होंने दशमेश पिता जी को दूध छकाकर उनकी सेवा की। गुरु जी को उस समय तक माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों— बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फतिह सिंघ जी के साथ गंगू द्वारा किए गए विश्वासघात की जानकारी मिल चुकी थी।

भाई नूरा माही जी ने रायकोट के उस समय

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; मो. ९८७२२-५४९९०

के नवाब भाई राय कल्ला को गुरु जी के बारे में जानकारी दी कि वे जंगल में ठहरे हुए हैं। यह सुनते ही भाई राय कल्ला तुरंत जंगल में गुरु जी के पास पहुंचे। तहे-दिल से गुरु जी का आदर-सम्मान किया और उन्हें अपने पास घर में ठहराया, उनकी सेवा की।

भाई नूरा माही जी की विवाहिता बहन बीबी नूरां सरहिंद में रह रही थी। भाई नूरा माही जी को एक घोड़े पर उसके पास सरहिंद में माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों के संबंध में ताजा जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा गया। बीबी नूरां ने रो-रोकर अपने भाई को साका सरहिंद एवं माता गुजरी जी के सदमे से हुए देहांत के बारे में बताया। उसने यह भी कहा कि हे भाई! कोई कुछ नहीं कर सका। ज़ालिम वज़ीर खान को दो मासूम साहिबज़ादों तथा उनकी वृद्ध दादी पर ज़रा भी तरस न आया।

लौटकर जब भाई नूरा माही जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को दुख भरे मन से सारा हाल कह सुनाया, तब गुरु जी ने तीर की नोक से दूब (कांस) का पौधा उखाड़ते हुए ज़ुल्म की जड़ उखाड़ने की भविष्यवाणी की, जो बाद में अक्षर-अक्षर सत्य सिद्ध हुई। शातिर कट्टरवादी ताकतों ने इस ऐतिहासिक घटना को मुसलमानों की जड़ उखड़ने के नाम पर प्रचारित किया। उनकी खूब निंदा हुई। सिक्ख गुरु साहिबान तथा गुरु-घर के सच्चे श्रद्धालुओं व अनन्य सेवकों में अनेक मुसलमान भी शामिल रहे हैं और अब भी हैं। सच्चाई और तवारीख़ को केवल तथाकथित संभ्रांत लोगों, राजाओं, रानियों तक सीमित व संकुचित रखना ठीक नहीं है। नवाब भाई राय कल्ला के वंशज अब पाकिस्तान में रहते हैं। हमें भाई नूरा माही जी के वंशजों के संबंध में भी जानकारी जुटानी होगी कि वे अब कहां रहते हैं। उनका सम्मान किया जाना भी ज़रूरी है। रायकोट की महान् भूमि के महान सपूत भाई नूरा माही जी के घर-परिवार के बारे में हम अभी तक सटीक जानकारी प्राप्त नहीं कर सके हैं। रायकोट के नज़दीकी गांव (अब कसबा) 'नूरपुरा' के वासी उन्हें अपने गांव से संबंधित बताते हैं। गांव लम्मा जट्टपुरा की एक पत्ती (हिस्सा) का नाम 'नूरा पत्ती' होने के कारण इस गांव के लोग भाई नूरा माही जी को गांव लम्मा जट्टपुरा का वासी मानते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इक्कीस दिन इस गांव में ठहरे थे। यहां पर उनकी याद में सुंदर गुरु-घर सुशोभित है।

शहीद बाबा गुरबखश सिंघ

-स. वरिआम सिंघ*

दिसंबर, १७६४ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने हिंदोस्तान पर सातवां हमला किया। वास्तव में उसने इस बार नजीबे रुहेले की मदद के लिए दिल्ली आना था, क्योंकि वह वहां घिर चुका था। जवाहर सिंघ भगतपुरिये ने दिल्ली पर हमला करने तथा इस तरह अपने पिता की मृत्यु का नजीब-उद-दौला से बदला लेने के लिए खालसा जी से और मराठों से भी सहायता मांगी। मराठों का सरदार मलहार राव हुलकर तो खड़ा तमाशा ही देखता रहा, परंतु दल खालसा के सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया पंद्रह हजार सिंघों सहित जवाहर सिंघ की मदद हेतु थे। नजीब-उद-दौला ने अपने आप को मुसीबत में घिरा देखकर अब्दाली को संदेश भेज दिया था। अब्दाली को ये भी खबरें मिल चुकी थीं कि सिंघों ने पंजाब में दुर्रानियों का सफाया कर दिया है। सिंघों ने सरहिंद पर कब्जा कर लिया था। काबली मल्ल ने लाहौर में खालसा जी की ईन (अधीनगी) मान ली थी। जहान खान तथा सरबलंद खान सियालकोट तथा रुहतास में सिंघों से बुरी तरह मात खा चुके थे। इन सारे हालातों को मुख्य रखकर अब्दाली ने अपने साथ कलात के बलोच हाकिम मौर नसीर खान को लिया तथा सिंघों के विरुद्ध जेहाद का नारा देते हुए हिंदोस्तान पर सातवां हमला बोल दिया।

इस समय सिंघ सरदार अलग-अलग मुहिमों पर गये हुए थे तथा केंद्रीय पंजाब सिंघों से लगभग खाली ही था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया जवाहर सिंघ की सहायता हेतु दिल्ली में थे। भंगी सरदार सांदल बार के क्षेत्र की तरफ थे। केवल सरदार चढ़त सिंघ ही सियालकोट में थे। उन्होंने जब अब्दाली के लाहौर पहुंचने की खबर सुनी तो उसने अब्दाली के कैंप पर हमला कर दिया। हमला इतना तेज एवं भारी था कि दुर्रानियों को हाथों-पैरों की पड़ गई और उनका बहुत नुकसान हुआ। इस तरह सरदार चढ़त सिंघ अब्दाली से एक सफल टक्कर लेकर, फिर किसी दूसरे मौके के इंतजार में एक तरफ हट गए।

अब्दाली को खबर मिली कि सिंघ श्री अमृतसर की तरफ गये हैं। सिंघों का पीछा करने के लिए उसने श्री अमृतसर की तरफ चढ़ाई की। श्री अमृतसर श्री दरबार साहिब में उस समय लगभग तीस सिंघ ही थे तथा इनके जत्थेदार निहंग सिंघ बाबा गुरबखश सिंघ थे। बाबा गुरबखश सिंघ गांव लील (ज़िला तरनतारन, माझा क्षेत्र) के निवासी थे तथा इन्होंने भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका था। पक्के नित्तनेमी, रहित मर्यादा में परिपक्व तथा जहां भी कहीं जंग होती, हमेशा आगे होकर डटते थे।

अब्दाली के द्वारा श्री दरबार साहिब पर हमला करने की खबर सुनते ही निहंग सिंघ बाबा गुरबखश सिंघ तथा उनके तीस साथियों ने श्री दरबार साहिब की सुरक्षा के लिए तैयारी आरंभ कर दी। वे सभी श्री दरबार साहिब के सम्मुख शहीदी प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहे थे। किसी ने नीला बाणा (पहरावा) सजाया, किसी ने सफेद और किसी ने केसरी :

किसै पुशाक थी नीली सजाई,
किनै सेत किसै केसरी रंगवाई।... ।३५।

इन सब सिंघों ने अपने शस्त्र-वस्त्र सजा लिये। 'अनंदु साहिब' की पांच पउड़ियों का पाठ किया, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुकमनामा लिया, कड़ाह प्रशाद बांटा गया। ये सब तैयारियां एक विवाह की तरह की गईं। भाई

*भूतपूर्व सचिव, धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर-१४३००६

रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

पंज पौड़ी सिंघ अनंद पढ़ायो . . .
बिआहि वांग कीयो जग्ग उछाहि,
सिंघन बहाइ खुलायो कड़ाहि ।३८ ।

इस तरह पूरी तैयारी कर अकाल बुंगे से उतर कर बाबा गुरबखश सिंघ अपने साथियों सहित श्री दरबार साहिब माथा टेकने गये :

कर कंगनो, सिर सेहरो, मोढे धर तलवार ।
तखतों उतर निहंग सिंघ, पूजन चलयो दरबार ।४३ ।

और फिर सिंघों ने अरदास की :

हरिमंदर के हजूर इम खड़ कर करी अरदास ।
सतिगुर सिक्खी संग निभे, सीस केसन के सास ।४८ ।

इतने में अब्दाली की फौज परिक्रमा के पास पहुंच गई । सिंघ मात्र तीस परंतु अब्दाली की फौज की गिनती छत्तीस हजार थी । सिंघ जिस तरफ चल पड़ते दुश्मनों की कतारें खाली करते जाते । इस तरह वे श्री दरबार साहिब की सुरक्षा के लिए दुश्मन से लोहा लेते हुए एक-दूसरे से आगे होकर शहीद होते गये । निहंग सिंघ व बाबा गुरबखश सिंघ सबको हौसला दे रहे थे और आगे ही आगे बढ़कर लड़ने की प्रेरणा कर रहे थे । उनके पांव आगे ही आगे जाते हैं :

पट आगै पत ऊबरे पग पाछे पत जाइ ।
बैरी खंडै सिर धरै, फिर कया तकन सहाइ ।५८ ।

दुर्रानियों के शरीर बकतर से ढके हुए थे । इधर सिंघों के पास शरीर ढकने के लिए पूरे वस्त्र भी नहीं थे । दुर्रानियों के पास लंबी मार करने वाले हथियार, तीर, बंदूक आदि थे । सिंघों के पास तेगें एवं बरछे ही थे, मगर सिंघों के मन में अपने पवित्र धर्म-स्थान की रक्षा के लिए एक दूसरे से आगे बढ़कर शहीद होने की उमंग थी :

आप बिच ते करे करार,
तुहि ते अगै मैं होगु सिधार ।५२ ।

सिंघों के जोश ने दुश्मन को धूल चटा उनकी हाय-तौबा करवा दी । जब काफी सिंघ शहीद हो गये तो बाबा गुरबखश सिंघ खुद तेग लेकर वैरी के सिर पर जा धमके । वैरियों के शरीर को बकतर सहित चीरते हुए शत्रुओं की कतारें खाली करते गये । शत्रु ढाल का सहारा लेते थे, किंतु सिंघों ने ढाल भी छोड़ दी । ''मुंह छुपाकर नहीं, अब सामने होकर लड़ना है ।'' गिलजई अब दूर से ही गोलियों या तीरों से लड़ रहे थे, पास आने की जुर्रत नहीं कर रहे थे ।

बाबा गुरबखश सिंघ मैदान में पहुंच कर लड़ रहे थे । दुश्मनों के तीर उनके शरीर को चीरते जाते । असंख्य जख्म और उनमें से खून ऐसे बह रहा था जैसे कोल्हू में से रस-धारा बह रही हो या जैसे बड़ी मश्क में छेद हुए हों तथा उसमें से चहुं ओर फव्वारे छूट रहे हों :

जनु बड मशक सु भए सलाख,
छुटे फुहारे चहूं वल झाक । . . . ७५ ।

सिंघों का शरीर रक्त-हीन हो रहा है, परंतु पैर फिर भी आगे ही जाते हैं । चारों ओर से घेरा पड़ गया । गिलजइयों ने चारों ओर से नेजे बरसाये तथा सिंघ जी घुटनों के बल गिरे, किंतु हाथ से तेग नहीं छोड़ी, चलती ही रही । अंतिम समय आ गया और वे गुरु-चरणों में जा पहुंचे । 'जंगनामा' के कर्त्ता काजी नूर मुहम्मद ने यह सारा युद्ध अपनी आंखों से देखा । वो इस हमले के दौरान अब्दाली के साथ ही था । इस साके के बारे में नूर मुहम्मद लिखता है— ''जब बादशाह तथा शाही लशकर चक्क (गुरु) (श्री अमृतसर) पहुंचा तो कोई काफिर वहां नजर नहीं आया । थोड़े-से आदमी गढ़ी (बुंगे) में टिके हुए थे कि अपना खून बहा दें । उन्होंने अपने आप को गुरु पर से कुर्बान कर दिया । जब उन्होंने बादशाह तथा इसलामी लशकर को देखा तो वे सभी बुंगे में से निकल पड़े । वे सभी गिनती में तीस थे । वे जरा भी डरे एवं घबराये नहीं । उन्हें न कत्ल होने का डर था, न मृत्यु का भय । वे गाजियों से उलझ पड़े तथा उलझन में अपना खून बहा गये । इस तरह सारे ही (सिंघ) कत्ल (शहीद) हो गये ।''

यह है काजी नूर मुहम्मद का आंखों देखा बयान कि कैसे मात्र तीस सिंघों ने अब्दाली की तीस हजार अफगानी तथा बलोच फौज का मुकाबला किया और मृत्यु से निडर होकर गुरु के नाम पर अपनी जान वार गये ।

सेना के महानायक जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा)

–स. सुरजीत सिंघ*

भारतीय सेना के गौरवशाली इतिहास में लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) को सदैव सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाता है, क्योंकि वे ऐसे गौरवशाली समय के महानायक हैं जिस समय में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की नेतृत्व क्षमता, कूटनीतिक कौशलता, पराक्रम और उदारता के सुनहरे रंग देखे गए हैं। जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) का जन्म १३ फरवरी, १९१६ ई. को अविभाजित भारत (अब पाकिस्तान) के झेलम जिले के शहर कालेगुजरां में हुआ था। भारतीय सेना की पंजाब रेजिमेन्ट में वर्ष १९३९ में आपने सेकण्ड लेफ्टिनेंट का कमीशन प्राप्त किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय रेजिमेन्ट की प्रथम बटालियन की कमान संभालने के उपरान्त बर्मा में स. जगजीत सिंघ (अरोड़ा) ने खूब कौशल दिखाये।

वर्ष १९४६ में कश्मीर सैन्य अभियान में राजौरी जिले के पीर कलेवा क्षेत्र में कुशल नेतृत्व के फलस्वरूप, महरू के इनफेन्ट्री स्कूल में डिप्टी कमांडर रहे जनरल अरोड़ा को फरवरी, १९४७ ई. में ब्रिगेड की कमान सौंप दी गई और इस प्रकार १९४७–४८ ई. के सैन्य मिशन में नेतृत्व प्रदान किया। अपनी प्रभावशीलता, लगन, नेतृत्व–क्षमता, पराक्रम, उदारता, कूटनीतिक कौशलता एवं समयबद्धता के लिए विशेष रूप से पहचाने जाने वाले जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) को कर्नल पद पर पदोन्नत किए जाने से पूर्व कई महत्वपूर्ण सैन्य जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं, जिनका आपने विद्वतापूर्वक बाखूबी निर्वाह किया। पूरबी क्षेत्र में सेना की ३३वीं कोर कमान संभालने से पूर्व आप सेना मुख्यालय में सैन्य प्रशिक्षण के निर्देशक पद पर आसीन रहे। नेशनल डिफेन्स कॉलेज के जनरल अरोड़ा वर्ष १९६० ई. में पूरबी सेक्टर के बिग्रेडियर जनरल ऑफ कोर हेड क्वार्टर्स पर तैनात किए गए।

फरवरी, १९६३ ई. में मेजर जनरल पदोन्नति के पश्चात आपने इनफेन्ट्री डिवीजन की कमान संभाली। जून, १९६६ ई. में डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ बनने के साथ ही श्रेष्ठ उपलब्धियों वाले जनरल अरोड़ा को लेफ्टिनेंट जनरल की उपाधि से सम्मानित कर दिया गया। अप्रैल, १९६७ ई. तक इसी पद पर बने रहने के उपरान्त आपको कोर हेडक्वार्टर्स के जनरल आफिसर कमांडिंग (जी.ओ. सी.) के रूप में तैनात किया गया। वर्ष १९६९ ई. में पूरबी कमान के जी.ओ.सी. इन चीफ की नियुक्ति पाने वाले लेफ्टिनेंट जनरल अरोड़ा के सैन्य जीवन की सर्वाधिक बड़ी चुनौती सन् १९७१ में पाकिस्तान

*५७–बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)—३२४००७, फोन : ९४१३६–५१९१७

के विरुद्ध छिड़े युद्ध के रूप में सामने आई।

पाकिस्तान ने ३ दिसंबर, १९७१ ई. को भारत के प्रमुख वायु सैनिक अड्डों पर हवाई हमलों के साथ खुला युद्ध छेड़ दिया। अब जनरल अरोड़ा ने पाक सेना के खिलाफ सुनियोजित सैन्य अभियान प्रारंभ करते हुए युद्ध-नीति के अनुसार थल सेना और वायु सेना की सामूहिक शक्ति का उपयोग कर पाक सेना को पीछे खदेड़ते हुए उनकी घेराबन्दी करने हेतु बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों को वायु सेना के विमानों, हेलीकाप्टरों की मदद से पैराशूट द्वारा उतार दिया और साथ ही साथ ढाका सैनिक कूच के लिए हाईवे मार्गों एवं मुख्य सड़कों के स्थान पर कसबों और गांवों के रास्तों से सशस्त्र सेनाओं को आगे बढ़ाया गया। जनरल अरोड़ा की कुशल सैनिक व्यूह-रचना के फलस्वरूप ढाका का सम्बन्ध चारों तरफ से कट गया और मात्र दो सप्ताह के घमासान में ही पाकिस्तानी सेना ध्वस्त हो गयी। अब पाक सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता शेष नहीं बचा। विवश एवं हारकर १६ दिसंबर, १९७१ ई. को पाकिस्तानी सेना के कमान्डर जनरल ए. ए. के. नियाजी ने समस्त आयुध हथियारों और ९० हजार सैनिकों के साथ भारतीय सेना के कमान्डर जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार ''मनि जीतै जगु जीतु'' आदर्श वाले जनरल अरोड़ा की अगुआई में भारतीय सेना ने देश के राजनीतिक नेतृत्व के इरादों को बंगला देश का उदय कर विश्व-पटल पर अपनी बहादुरी का परचम लहराया। इस ऐतिहासिक जीत के पश्चात भारत के सपूत जनरल अरोड़ा का नाम घर-घर जाना-पहचाना हो गया और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छा गया।

जनरल अरोड़ा जैसे अनुशासित और उदार हृदय वाले सेना महानायक विरले ही होते हैं। भारी दबाव के बावजूद जनरल अरोड़ा ने आत्मसमर्पण किए हुए ९० हजार पाक सैनिकों को सुरक्षा प्रदान की, जबकि बंगला मुक्ति वाहिनी और स्थानीय जनता पाक सैनिकों के खून की प्यासी थी। ''तेरे भाणे सरबत्त दा भला'' चाहने वाले जनरल अरोड़ा ने किसी पाक सैनिक के शरीर पर खरोंच तक नहीं आने दी। विशेष खूबियों से भरे व्यक्तित्व वाले जनरल अरोड़ा सादा जीवन, उच्च विचार के अनुरूप अपने सहयोगी जवानों के बीच खूब घुलमिल जाते थे और सदैव आगे आकर नेतृत्व प्रदान करने के सिद्धान्त में दृढ़ विश्वास रखते थे। पद्मभूषण एवं परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित जनरल अरोड़ा सेना से १९७३ ई. में सेवानिवृत्त होकर समाज-सेवा में जीवन-यापन करने लगे।

वर्ष १९८६ ई. में जनरल अरोड़ा भारत की राज्य सभा के लिए चुन लिए गए। दैनिक जीवन में पूर्ण ईमानदारी एवं पारदर्शिता अपनाने वाले जनरल अरोड़ा का सादा जीवन सदैव खुली किताब की भांति रहा है, जहां लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सीधे रास्ते पर चलकर गलत कार्यों का खुलकर विरोध हुआ है। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में घटित ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार का

विरोध करने वाले जनरल अरोड़ा ने १९८४ ई. के पाशविक कत्लेआम के पीड़ितों को न्याय एवं सहायता दिलाने का भरपूर प्रयास किया था। यह भी संयोग ही है कि जनरल अरोड़ा एवं जनरल नियाजी अविभाजित भारत के शहर क्वेटा के एक ही कॉलेज के सहपाठी रहे थे।

सेना का यह चमकता महानायक ८९ वर्ष की आयु में ३ मई, २००५ ई. को परलोकगामी हो गया है, किन्तु पाकिस्तानी जनरल नियाजी द्वारा आत्मसमर्पण करने, अपनी पिस्तौल सौंपने और समझौते पर हस्ताक्षर करने के दृश्य, सम्मान की उच्च परम्पराओं का प्रतीक बन सदियों तक भारतवासियों में उत्साह और जोश भरते रहेंगे। जनरल अरोड़ा इतिहास के ऐसे शिल्पकार हैं जिन्होंने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर प्रतिष्ठा दिलाई है। भारत और बंगला देश की संसद में जनरल अरोड़ा की उत्कृष्ट राष्ट्रीय सेवाओं का स्मरण बड़े गर्व और सम्मान के साथ किया जाता रहा है। आज वे भले ही हमारे बीच सशरीर नहीं रहे, किंतु जब भी भारतीय सेना के पराक्रम और शौर्य का वर्णन होगा, जनरल अरोड़ा का स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया नाम हमेशा-हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा।

कविता

श्री गुरु नानक देव जी

-स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी'*

'नानक' नाम है शबनम[१] जैसा,
खुशबूदार हवा का नाम।
साँस के साथ जो दिल में उतरे,
उस रंगीन सबा[२] का नाम।

उसकी आँखें चाँद-सितारों को रौशन कर देती थीं,
यह रौशन सूरज भी तो है,
उसके नक्श-ए-पा[३] का नाम।

सात सुरों के जादूगर का जादू अब भी चलता है,
जब तक मौसीकी[४] है ज़िंदा,
ज़िंदा 'मरदाना' का नाम।

वली कंधारी छोड़ तकब्बुर[५] नीचे आया परबत से,
दोनों हाथ उठा कर बोला,
नानक नाम ख़ुदा का नाम।

इस दर पर सिजदा कर मैं, खुशकिस्मत हो जाता हूं,
इस दर से महरूमी[६] तो है,
'पंछी' एक सज़ा का नाम।

१. शबनम=ओस, २. सबा= प्रात:काल, ३.नक्श-ए-पा= पैर का निशान, ४. मौसीकी= संगीत, ५. तकब्बुर= अहंकार, ६. महरूमी= वंचित होना

*जेठी नगर, मलेरकोटला रोड, खन्ना (लुधियाना),—१४१४०१, फोन : ९४१७०-९१६६८

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १२५

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

-डॉ. मनजीत कौर*

अविगतो निरमाइलु उपजे
निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥
सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ
साचै सबदि समाइ लीआ ॥
एके कउ सचु एका जाणै
हउमै दूजा दूरि कीआ ॥
सो जोगी गुर सबदु पछाणै
अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥
जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै
अंतरि जाणै सरब दइआ ॥
नानक ता कउ मिलै वडाई
आपु पछाणै सरब जीआ ॥ २४ ॥ (पन्ना ९४०)

२४वीं पउड़ी से लेकर ४२वीं पउड़ी तक इस पावन बाणी में प्रश्न-उत्तर नहीं है, अपितु गुरु नानक पातशाह ने अपने मत की स्वयं ही व्याख्या की है कि किस प्रकार गुरु-शबद की बरकत से मनुष्य का निश्चय बनता है और ऐसा व्यक्ति गुरु-शबद से जुड़ कर भटकना-मुक्त हो जाता है। इसके विपरीत अपने मन के पीछे चलने वाला (मनमुख) सत्य मार्ग से विचलित होकर सदैव भटकता ही रहता है। गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अपने मन को सुधार कर ईश्वर की बंदगी करता हुआ उसी में एकरूप हो जाता है और जीवन रूपी बाजी जीत लेता है। ईश्वर का इस जगत को बनाने का मकसद यही है कि मनुष्य गुरु-शबद द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त कर अपना लोक-परलोक सफल बना सके। साथ ही अपने जीवन के असली मनोरथ को समझता हुआ रिद्धियों-सिद्धियों से भी ऊपर उठ जाता है और उसकी अहंकार वाली वृत्ति समूल नष्ट हो जाती है। गुरु-कृपा से ही वह ईश्वर-नाम से जुड़ कर भवसागर से पार उतर सकता है अन्यथा जीव कर्मकांडी होकर मायाजाल में ही फंसा रहता है। स्वयं को गुरु-चरणों में समर्पित कर जीव स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी प्रभु-चरणों में जोड़ने योग्य हो जाता है। गुरु-वचनों की कमाई के बिना और कोई भी साधन इसे मोह-माया से बचा नहीं सकता। इस संसार में जिस मनुष्य को पूर्ण गुरु मिल जाता है वही नाम रूपी सच्चा व्यापार करता है और संसार रूपी भवसागर से पार उतर जाता है। ४०वीं पउड़ी में राम और रावण के प्रसंग द्वारा जीव-स्त्री को समझाया गया है। आगे गुरु पातशाह ने गुरमुख की विवेकशीलता का वर्णन किया है तथा ४२वीं पउड़ी में इस तथ्य को उजागर किया है कि नाम तथा अंहकार दोनों एक साथ नहीं रह सकते। जो व्यक्ति गुरु-शबद में मन को एकाग्र कर लेता है वही सर्वत्र ईश्वर की ज्योति के दीदार करता है।

२४वीं से ४२वीं पउड़ी तक के संक्षिप्त परिचय के उपरांत क्रम से विचार-व्याख्या करने का गुरु-

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

कृपा से प्रयास करते हैं:—

२४वीं पउड़ी में गुरु पातशाह ने पावन दिशा-निर्देश किया है कि गुरु-शबद की बरकत से परम पिता परमेश्वर की सर्वव्यापकता एवं सर्वगुण-सम्पन्नता का बोध होता है। वास्तविक योगी की परिभाषा बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि जब जीव को अपने ज्ञान का तनिक भी अभिमान नहीं रह जाता तब प्रभु-कृपा से निर्मलता उत्पन्न होती है। यह तभी सम्भव है जब पूर्ण सतिगुरु प्रसन्न हो जाये। तब जीव को परम पद की प्राप्ति होती है और फलस्वरूप जीव सच्चे गुरु-शबद में लीन हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार एवं द्वैत-भाव को दूर कर केवल परम सत्य परमेश्वर को ही जानता और मानता है अर्थात् उसके लिए सर्वकला समर्थ, सर्वोच्च शक्ति, करने एवं करवाने में समर्थ केवल परमात्मा ही होता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वही असल में योगी है जो सतिगुरु के शबद को समझता है। उसी का हृदय-कमल सदृश्य खिल उठता है। जो व्यक्ति विकारों से मुक्त हो जाता है, उसे सब समझ आ जाता है। वह हंस की तरह नीर-क्षीर विवेकी हो जाता है, जैसे हंस दूध और पानी को अलग करने का सामर्थ्य रखता है। जीव सूझवान (विवेकशील) बन जाता है और उसके हृदय में करुणा-भाव (दया) भरी रहती है। हे नानक! उसी को ही महानता मिलती है जो स्वयं को समस्त जीवों के रूप में पहचानता है। वास्तव में यह ईश्वर-प्रदत्त जीव के लिए सर्वोत्तम गुण है। जब जर्रे-जर्रे में पारब्रह्म परमेश्वर की ज्योति दिखाई देने लगे तब कोई गैर नहीं रह जाता। सबके साथ प्यार का व्यवहार प्राकृतिक रूप से होने लगता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं। गुरु नानक पातशाह का पावन फरमान है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (पन्ना १३)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की पावन बाणी परमेश्वर की सर्वव्यापकता के सहज दर्शन करवाती है :

तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥...
सभे साझीवाल सदाइनि
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

भक्त कबीर जी की पावन बाणी भी इस सन्दर्भ में यहां उल्लेखनीय है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
(पन्ना १३४९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब हमारा अहंकार नष्ट हो जाता है तभी गुरु-कृपा से सर्वत्र कण-कण, जन-जन में परमेश्वर का नूर दिखाई देने लगता है। तब हमारी संकीर्ण सोच और अभिमान तिरोहित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अपने आप में और सब में प्रभु के दीदार होने लगते हैं। वस्तुत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी सर्वधर्म समन्वय, भ्रातृ-भावना एवं विश्व कुटुंबकम-भाव की पोषक है :

साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥
झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥
आवा गउणु मिटै गुर सबदी
आपे परखै बखसि लइआ ॥
एका बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥
सो बूझै जिसु आपि बुझाए

गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥
नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥२५ ॥
(पन्ना ९४०)

२५वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने गुरमुख तथा मनमुख व्यक्ति की उत्तम एवं अधम अवस्था का वर्णन किया है। साथ ही इस रहस्य का भी उल्लेख किया है कि मन के पीछे लग कर द्वैत-भाव से ग्रसित व्यक्ति किस प्रकार दुखी रहते हैं, लेकिन उनके दुखों के बंधन गुरु-कृपा के माध्यम से प्रभु स्वयं ही तोड़ते हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख व्यक्ति सत्य स्वरूप परमेश्वर से ही उत्पन्न होता है और उसी में लीन हो जाता है। इस प्रकार प्रभु तथा गुरमुख अभेद हो जाते हैं। परिणामस्वरूप सत्य पवित्रता का ही रूप हो जाता है। झूठे व्यक्ति को इस संसार में आकर कोई वास्तविक ठिकाना नहीं मिलता। माया के प्रभावाधीन व्यक्ति जगत में आते हैं, लेकिन उन्हें आवागमन में फंसा रहना पड़ता है, क्योंकि द्वैत भावना के कारण उनका आवागमन का चक्कर बना रहता है। शबद-गुरु के माध्यम से जीव का आवागमन का बंधन समाप्त हो जाता है और परमेश्वर स्वयं जीवों को क्षमा कर देता है अर्थात् जो सतिगुरु की कसौटी पर खरा उतरता है वह प्रभु की रहमत का पात्र बन जाता है। जिन्हें समस्त रसों का घर (आनंद का अथाह सागर, प्रभु) भूल जाता है अर्थात् जिन्हें आनंद के सागर परमेश्वर का नाम याद नहीं रहता, उन्हें द्वैत-भाव की पीड़ा सताती रहती है। ऐसे लोग ही अहंकार से ग्रसित होकर दुखों में घिरे रहते हैं।

इस भेद को वहीं समझ सकता है जिसे प्रभु खुद समझाते हैं। ऐसा व्यक्ति गुरु-शबद में लीन होकर अहंकार जैसे भयानक रोग से मुक्त हो जाता है। इस पउड़ी के अन्त में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि जिस जीव ने अहं एवं द्वैत-भाव त्याग दिया है उसे भवसागर से पार उतारने वाला प्रभु पार उतार ही लेता है।

गुरु पातशाह ने उपरोक्त पउड़ी में स्पष्ट किया है कि सच्चे गुरु के बिना वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं होता और बिना ज्ञान के अहंकार जैसे दीर्घ रोग जीव को परमेश्वर की कसौटी पर खरा नहीं उतरने देते। इसी कारण जीव आवागमन के भंवर में भटकता रहता है। जपु जी साहिब पावन बाणी में गुरु साहिब ने इस संदर्भ में बड़ा सुंदर समझाया है :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

अर्थात् प्रत्येक जीव और उसका कर्म, यहां तक कि प्रकृति का कण-कण परमेश्वर के हुक्म में कार्यशील है। हुक्म से बाहर कोई नहीं हो सकता। गुरु-कृपा से जो प्रभु के हुक्म को समझ लेता है अर्थात् जो इस गूढ़ रहस्य को समझ लेता है वह फिर अहंकार की बात नहीं करता। मनुष्य जब ईश्वर के हुक्म को जान लेता है तो जीवों का कर्त्ता होने का भाव स्वयं ही तिरोहित हो जाता है और जीव कर्त्ता होने का भाव त्याग कर प्रभु को ही सर्वस्व मानता हुआ सदैव आनंदित रहता है।

इस संदर्भ में अपने हृदय के भावों को अभिव्यक्त करना चाहती हूं। कविता, जो (गुरमत ज्ञान) पत्रिका में भी प्रकाशित हो चुकी है, की चंद पंक्तियां पेश करना चाहती हूं :

—प्रभु के हुक्म बिना पत्ता कोई हिल सकता नहीं।
प्रभु के हुक्म बिना फूल भी खिल सकता नहीं।
प्रभु के हुक्म बिना नदियां कल-कल बहती नहीं।
प्रभु के हुक्म बिना धरती भार सहती नहीं।
प्रभु के हुक्म में चारों खाणियों के जीव हैं।
प्रभु के हुक्म में कली-फूल-फल-बीज हैं।
प्रभु के हुक्म में गुरबाणी का उजास है।
प्रभु के हुक्म में जीवन संवरने की आस है।
—मनमुखि भूलै जम की काणि॥
पर घरु जोहै हाणे हाणि॥
मनमुखि भरमि भवै बेबाणि॥
वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि॥
सबदु न चीनै लवै कुबाणि॥
नानक साचि रते सुखु जाणि॥ २६॥ (पन्ना ९४१)

२६वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह ने मनमुख व्यक्ति की अधम गति की ओर संकेत किया है तथा कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन किया है। अगर ऐसी अधम स्थिति से बचना है तो अपनी मनमुखता त्याग कर सच्चे प्रभु में लीन हो जाओ जो समस्त सुखों का दाता है।

इस पउड़ी की विचार-व्याख्या से पूर्व मनमुख एवं गुरमुख की परिभाषा गुरमति अनुसार समझने का प्रयास करते हैं।

'मनमुख' अर्थात् अपने विकारी मन के पीछे लगकर अपना बेशकीमती जीवन व्यर्थ के कार्यों में बर्बाद करने वाला व्यक्ति, जो जन्म-मरण के चक्कर में ही भटकता रहता है।

'गुरमुख' अर्थात् गुरु की ओर मुख है जिसका तथा गुरु की हर बात, हुक्म जिसे प्यारा लगता है तथा जो गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर अपना लोक-परलोक सफल बना लेता है। गुरबाणी आशयानुसार यहां उदाहरण प्रस्तुत है :

—मनमुख मूलहु भुलिआ
विचि लबु लोभु अहंकारु॥
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै
सबदि न करहि वीचारु॥ (पन्ना ३१६)
— गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै॥
नानक गुरमुखि साचि समावै॥ (पन्ना ९४१)

गुरबाणी में जहां अनेक स्थानों पर मनमुख एवं गुरमुख की अवस्था का जिक्र हुआ है वहीं अनेक उदाहरणों द्वारा मनमुख एवं गुरमुख की तुलना कर समझाया गया है कि गुरमुख व्यक्ति इस दुनिया में लाभ का सौदा कर अर्थात् लाभान्वित होकर जाते हैं। मनमुख व्यक्ति अपने जीवन की पूंजी गंवाकर यहां से जाते हैं :

गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ॥
(पन्ना ७४)

गुरबाणी में चौथे पातशाह का पावन फरमान भी इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है :

गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ॥
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ॥
(पन्ना ११)

२६वीं पउड़ी में गुरु पातशाह मनमुख व्यक्ति की अधम स्थिति का वर्णन करते हुए पावन फरमान करते हैं कि मनमुख व्यक्ति अपने मन के पीछे चलता हुआ सही जीवन-मार्ग से भटक जाता है और यम का मोहताज होकर भटकता रहता है। वह पर-धन एवं पर-रूप को ही ताकता रहता है, जोकि पूर्णतया घाटे का सौदा है। इस प्रकार के गलत कर्म करने में नुकसान ही नुकसान है। मनमुख व्यक्ति भ्रमों में पड़ा जादू-टोने-टोटके

करता हुआ शमशान भूमि जैसे निर्जन स्थानों पर गुमराह हो भटकता रहता है। वास्तव में ऐसा व्यक्ति सही जीवन-राह से भ्रमित हो कुमार्गी हो जाता है। जिसने रास्ता ही गलत चुन लिया उसे सही मंजिल प्राप्त हो ही नहीं सकती। (असल में) मनमुख व्यक्ति गुरु के शबद (अमृतमयी शबद-शक्ति) को पहचानता ही नहीं है। उसे उसकी कद्र नहीं होती, इसलिए वह कुवचन बोलता रहता है (और अपनी वास्तविक पूंजी लुटा बैठता है)। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि सुख तो उसे ही नसीब होता है जो सत्य स्वरूप प्रभु में लीन हो गया हो।

वास्तव में अपने मन के पीछे चलने वाला व्यक्ति गलत मार्ग अपना लेता है और व्यर्थ के आडंबरों एवं बुरे कामों में उलझ जाता है। उसके क्रिया-कलाप एवं वचन कभी शुभ नहीं होते। इसके फलस्वरूप उसके जीवन में निरंतर भटकाव बना रहता है। इस सन्दर्भ में गुरबाणी का पावन संदेश है :

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ॥
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ॥
मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ॥
कारणु करता करदा आइआ॥ (पन्ना ११५४)

अर्थात् भगवान ने एक खेल बनाया है और अनहद बाणी को शबद-रूप में हमें सुना दिया है। मनमुख व्यक्ति तो उसे सुनकर भी अनसुना कर देते हैं, लेकिन गुरमुख व्यक्ति उसके रहस्य को जान जाते हैं। वे जान जाते हैं कि इस शबद का कारण प्रभु खुद है, जो सदैव इसके नाद को बजाता रहता है।

वास्तव में बेशकीमती जीवन का कुछ विशेष मनोरथ है, लेकिन मनमुख व्यक्ति द्वैत-भाव में लगा रहता है और अनमोल समय बर्बाद कर लेता है। यह निश्चित है कि समय बीत जाने पर और अवसर चूक जाने पर पछतावा ही शेष रह जाता है। गुरबाणी में इसलिए हर पल जागरूक रहने की सीख दी गई है :

इकि कितु आए जनमु गवाए॥
मनमुख लागे दूजै भाए॥
एह वेला फिरि हाथि न आवै
पगि खिसिऐ पछुताइदा॥ (पन्ना १०६५)

गुरबाणी हमें व्यर्थ के आडंबरों, कर्मकांडों से बचा कर सच्चे मालिक प्रभु के साथ जोड़ती है। गुरबाणी में व्यर्थ के आडंबरों तथा कर्मकांडों की तुलना बंजर भूमि से की गई है। श्री गुरु नानक पातशाह ने अन्यत्र समझाया है कि जैसे बंजर भूमि में बोये गए बीज तथा उस पर की गई सारी मेहनत-मशक्कत व्यर्थ चली जाती है, वैसे ही कर्मकांडों में मनुष्य का बेशकीमती जीवन व्यर्थ चला जाता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु॥
काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु॥
(पन्ना ११७१)

आओ! गुरु-चरणों में अरदास करें कि हमारा जीवन भी रूपान्तरित हो! हम भी व्यर्थ के कर्मकांडों एवं मनमुखता को छोड़ कर एक अकाल पुरख वाहिगुरु के चरणों से जुड़ें! गुरबाणी से दिशा-निर्देश लेकर, गुरमुखों जैसा जीवन व्यतीत कर लोक-परलोक सुहेला करें! अमृतमयी बाणी ही हमारे जीवन का आधार हो!

ख़बरनामा

करतारपुर साहिब जाने का रास्ता खुला, 72 वर्ष बाद हकीकत में बदले ख़्वाब

शिकार माछिआं (डेरा बाबा नानक): ९ नवंबर: भारत-पाकिस्तान सहित पूरी दुनिया की समूची नानक-नाम लेवा सिक्ख संगत के लिए आज (९ नवंबर, २०१९) वे ऐतिहासिक और यादगारी पल थे जब ७२ वर्ष की अरदास के बाद संगत के खुले दर्शन-दीदार के लिए श्री करतारपुर साहिब का रास्ता खुल गया। इस अवसर पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पाकिस्तान स्थित मुकद्दस स्थान गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री करतारपुर साहिब के रास्ते के उद्घाटन से पहले किये गए समागम के दौरान सिक्ख जगत को गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब के रास्ते और श्री गुरु नानक देव जी के ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व की बधाई देते हुए गुरु साहिब की बाणी को मार्गदर्शक बताते हुए गुरु साहिब की शिक्षाओं पर चलने पर जोर दिया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा ५५० रुपए का यादगारी सिक्का भी जारी किया गया।

केसरी रंग की शानदार पगड़ी सजा कर समागम में पहुंचे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संगत को संबोधित करते हुए कहा आज वे इस पवित्र धरती पर आकर अपने आपको भाग्यवान महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिस तरह संगत कार-सेवा कर अपने अंदर खुशी का एहसास करती है, वही एहसास आज मैं अपने अंदर महसूस कर रहा हूं। मैं पूरे देश और दुनिया भर में बसे समूचे सिक्ख जगत को बधाई देता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि सिक्ख जगत की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से मुझे जिस राष्ट्रीय सम्मान के साथ नवाजा गया है, यह सम्मान, गौरव हमारी महान संत परंपरा के तेज, ज्ञान और तपस्या का परसाद है और मैं इस सम्मान को श्री गुरु नानक देव जी के चरणों में समर्पित करता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि ५५० वर्षीय प्रकाश गुरुपर्व से पहले चेक पोस्ट और करतारपुर साहिब रास्ते का खुलना सभी के लिए दोहरी खुशी लेकर आया है और यह रास्ता अमल में आने से संगत गुरुद्वारा साहिब के खुले दर्शन-दीदार कर सकेगी। उन्होंने पंजाब सरकार, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और करतारपुर साहिब के रास्ते के निर्माण के साथ जुड़े हर एक व्यक्ति का धन्यवाद किया। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने करतारपुर साहिब के साथ जुड़ी भारत की भावनाओं का सत्कार करते हुए पाकिस्तान द्वारा उचित समय-सीमा के अंदर रास्ता मुकम्मल किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी केवल सिक्ख पंथ और भारत के ही नहीं, बल्कि समूची मानवता के लिए प्रेरणा-स्त्रोत्र हैं। उन्होंने कहा कि करतारपुर साहिब केवल गुरु साहिब की कर्म-भूमि ही नहीं है, बल्कि करतारपुर साहिब की मिट्टी के कण-कण में गुरु

साहिब की खुशबू समाई हुई है और वहां की हवा में गुरु साहिब की बाणी घुली हुई है। करतारपुर साहिब की धरती पर हल चला कर गुरु साहिब ने समूचे लोक-जगत को अपना पहला नियम— किरत करने की उदाहरण दी और यहीं पर उन्होंने नाम जपने की विधि बतायी। यहीं पर ही उन्होंने मेहनत के साथ तैयार की गई फसल से उपजे अन्न को मिल कर छकने की रीति पैदा की— 'वंड छको' का मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि इस पवित्र स्थान के लिए वे जितना भी कुछ कर सकते हैं, वो कम है। प्रधानमंत्री ने 'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतह' बुला कर अपना भाषण शुरू किया और 'सतिनामु वाहिगुरू' का तीन बार उच्चारण कर भाषण समाप्त किया।

उद्घाटन समागम को संबोधित करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंघ ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के कारण आज वे गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब के दर्शन-दीदार करने जा रहे हैं और उनकी दर्शन की इच्छा पूरी हो रही है। उन्होंने कहा कि हम मुद्दतों से इकठ्ठा रहे हैं और अब पाकिस्तान को सोचना चाहिए कि वो लड़ाई-झगड़े त्याग कर आवाम की तरफ ध्यान दे। उन्होंने कहा कि आज बहुत महान और ऐतिहासिक दिन है। मुझे मालूम है कि आज पंजाब में खुशी के दीये जलेंगे।

इस अवसर पर वी. पी. सिंह बदनौर राज्यपाल पंजाब, केंद्रीय मंत्री बीबी हरसिमरत कौर बादल, केंद्रीय मंत्री स. हरदीप सिंघ, केंद्रीय मंत्री सोम प्रकाश, गुरदासपुर से सांसद सन्नी दयोल,पूर्व मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल, शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल के अलावा बड़ी संख्या में राजनीतिक नेता उपस्थित थे। स्टेज- संचालन की सेवा डॉ. रूप सिंघ मुख्य सचिव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने निभायी।

करतारपुर रास्ता (डेरा बाबा नानक), डॉ. कमल काहलों, गुरशरनजीत सिंघ पुरेवाल करीब ७ दशक से की जा रही संगत की अरदास आज (९ नवंबर, २०१९) उस समय संपूर्ण हो गई, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पाकिस्तान में स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री करतारपुर साहिब के लिए रास्ते का भारतीय सीमा से रस्मी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर पंजाब के राज्यपाल श्री वी. पी. सिंह बदनौर, श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल भी उपस्थित थे। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा पहले बी. एस. एफ. काम्पलेक्स शिकार माछिआं में अरदास समागम को संबोधित किया गया, उपरांत वे डेरा बाबा नानक में स्थित अंतर्राष्ट्रीय सरहद पर बने श्री करतारपुर साहिब रास्ते के यात्री टर्मिनल पर पहुंचे। उनकी तरफ से पहले यात्री टर्मिनल के अंदरूनी भाग का जायजा लिया गया और एक वीडियो द्वारा श्री गुरु नानक देव जी के जीवन से सबंधित जानकारी प्राप्त की गई। फिर गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब के रास्ते के लिए बने यात्री टर्मिनल का उद्घाटन किया। श्री मोदी ने गुरु-मर्यादा की पालना करते हुए गुरुद्वारा श्री करतारपुर

साहिब में भेंट करने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और मुख्यमंत्री पंजाब कैप्टन अमरिंदर सिंघ को रुमाला साहिब दिया। श्री मोदी द्वारा यात्री टर्मिनल से खालसाई निशान साहिब झुला कर पाकिस्तान के गुरुद्वारा श्री करतापुर साहिब के दर्शन के लिए पहले जत्थे को रस्मी तौर पर रवाना किया गया। यात्री टर्मिनल के अंदर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ से भी मिले। यहां कागजी कार्यवाही मुकम्मल करवाने के उपरांत जत्था पैदल जीरो लाइन पर लगे सुरक्षा फाटकों को पार कर पाकिस्तान में दाखिल हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गुरुद्वारा श्री बेर साहिब सुलतानपुर लोधी में नत्मस्तक हुए

सुलतानपुर लोधी : ९ नवंबर : जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी के ५५० वर्षीय प्रकाश गुरुपर्व के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुद्वारा श्री बेर साहिब, सुलतानपुर लोधी में नत्मस्तक होकर श्रद्धा प्रकट की। श्री नरेन्द्र मोदी ने गुरु साहिब जी के पवित्र स्थान में माथा टेका और कड़ाह प्रसाद की देग करवा कर अरदास की। इस अवसर पर उनके साथ केंद्रीय मंत्री बीबी हरसिमरत कौर बादल, पंजाब के राज्यपाल श्री वी. पी. सिंह बदनौर, मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंघ आदि मौजूद थे। प्रधानमंत्री १५ मिनट के करीब गुरुद्वारा साहिब में रहे। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को फूल अर्पण किये। वे गुरुद्वारा श्री बेर साहिब में गुरु साहिब के पावन स्थान श्री भोरा साहिब में भी नत्मस्तक हुए।

श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ने दिया सिक्ख पंथ के नाम संदेश

सुलतानपुर लोधी : १२ नवबर : गुरु नानक स्टेडियम में हुए मुख्य समागम के दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख पंथ के नाम संदेश देते हुए सिक्ख पंथ के आज के हालातों, विश्व सरोकारों और विश्व-प्रसंग में सिक्ख फलसफे की अहमियत को उभारा। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने अपने संदेश की शुरूआत ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व के मुबारक अवसर पर श्री करतारपुर साहिब का रास्ता खुलने पर ख़ुशी का प्रकटावा करते हुए पिछले साढ़े पाँच सौ वर्ष के दौरान सिक्ख पंथ के ऐतिहासिक सफ़र और मौजूदा दशा के मद्देनज़र भविष्य की संभावनाओं की तलाश करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम को अपने भविष्य के प्रति दिशा लेने के लिए अर्द्ध-शताब्दी पर्व को एक प्रेरणा के तौर पर लेना चाहिए। सिंघ साहिब ने कहा कि आज मानवीय जीवन में विकास की जगह विनाश भारी होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप कुदरत का बिगड़ता संतुलन, अहंवादी निज़ाम, व्यापारिक जंग, भौतिक

प्रसार, सभ्याचारों का दमन, विश्व आर्थिक मंदी और सांसारिक परमाणु जंग जैसे हालात मानवता को दरपेश हैं। उन्होंने व्यापक प्रसंग में बात करते हुए कहा कि केवल सिक्ख कौम ही नहीं आज समूचे संसार को श्री गुरु नानक देव जी के दिखाए जीवन-मार्ग की जरूरत है। सिंघ साहिब ने जात-पांत, ऊंच-नीच, स्त्री के साथ भेदभाव और सांसारिक तपिश जैसे मानवता को दरपेश संकट के हल के लिए गुरमति के फलसफे को नयी अतंर्दृष्टियों से खोलने की ज़रूरत बतायी। उन्होंने पंजाबियों में मातृ-भाषा के प्रति बेरुखी के रुझान के बारे में चिंता प्रकट करते हुए समूचे पंजाबी भाईचारे से अपील की कि हर पंजाबी अपने घर को पंजाबी बोली की टकसाल बनाए। उन्होंने समुच्चय सिक्ख कौम को छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा प्रतिष्ठित श्री अकाल तख़्त साहिब की सरप्रस्ती में एकत्रित होकर सांझीवालता पर आधारति पवित्र नियमों वाला एक ऐसा राजनीतिक और सामाजिक प्रबंध सामने लाने की ज़रूरत भी बतायी, जिससे समूचा विश्व भाईचारा और देश नेतृत्व हासिल कर सके।

श्री गुरु नानक देव जी के 550 वर्षीय प्रकाश पर्व समारोह में राष्ट्रपति सहित कई प्रमुख शख़्सियतों ने की शिरकत

सुलतानपुर लोधी : १२ नवंबर : श्री गुरु नानक देव जी के ५५० वर्षीय प्रकाश दिवस के अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री बेर साहिब के नज़दीक गुरु नानक स्टेडियम में करवाए मुख्य समागम के दौरान भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द सहित कई प्रमुख शख्सियतों ने शमूलियत कर श्री गुरु नानक देव जी के फलसफे को आज के विश्व-प्रसंग में मानवता के जीवन के लिए सबसे सटीक एवं उत्तम मार्ग करार दिया। इस दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कौम के नाम संदेश दिया। शिरोमणि अकाली दल के सरप्रस्त और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल ने भी संबोधित किया। समागम के दौरान पंजाब के राज्यपाल श्री वी. पी. सिंह बदनौर, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, केंद्रीय मंत्री श्री सोम प्रकाश, शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल सहित कई प्रमुख शख़्सियतें मौजूद थीं। इस दौरान देश भर में से पहुंची पंथक और धार्मिक हस्तियों ने भी गुरु साहिब के प्रति श्रद्धा एवं सत्कार प्रकट किया।

समागम के दौरान संगत के विशाल इकट्ठ को संबोधित करते हुए देश के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी ने मानव को गृहस्थ में रह कर धर्म कमाने का रास्ता दिखाया। गुरु साहिब ने धर्म-परंपरा में बनी इस

प्रथा को तोड़ा कि मुक्ति हासिल करने और धर्म कमाने के लिए गृहस्थ का त्याग करना ज़रूरी है। राष्ट्रपति श्री कोविन्द ने ठेठ पंजाबी में अपने संबोधन के दौरान सिक्ख कौम की भरपूर प्रशंसा करते हुए कहा कि सिक्खों ने गुरु साहिबान द्वारा दिखाए मार्ग पर चल कर मेहनत और ईमानदारी से दुनिया भर में नाम कमाया है और ये जहां-जहां भी बसते हैं सबके साथ भाईचारा रखते हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख गुरबाणी पर अमल करते हुए नि:स्वार्थ भावना के साथ सेवा करने के रूप में जाने जाते हैं। गुरु साहिब द्वारा दिया गया 'किरत करो, नाम जपो और वंड छको' का उपदेश सिक्खों के जीवन का आधार है। उन्होंने सिक्ख धर्म में मीरी-पीरी के सिद्धांत की बात करते हुए कहा कि इन दोनों का सुमेल सिक्ख धर्म की विलक्षणता है। उन्होंने सिक्ख संगत के साथ-साथ समूचे राष्ट्र को प्रकाश पर्व की बधाई देते हुए गुरु साहिब की विचारधारा के साथ जुड़ कर समाज को बेहतर बनाने के लिए योगदान देने की अपील भी की।

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और शिरोमणि अकाली दल के सरप्रस्त स. प्रकाश सिंघ बादल ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी ने मानव-जीवन को बेहतर बनाने हेतु मार्गदर्शन किया और मानव को सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भी सुचेत किया। गुरु साहिब ने ऊंच-नीच, जात-पात और जब्र-ज़ुल्म का विरोध करते हुए दबे-कुचले लोगों के हक में आवाज़ उठाई। स्त्री का सत्कार गुरु साहिब की शिक्षाओं में अहम है। उन्होंने श्री करतारपुर साहिब के रास्ते का सिक्खों को तोहफ़ा देने पर भारत और पाकिस्तान की सरकार का धन्यवाद किया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने देश के राष्ट्रपति सहित सभी प्रमुख शख़्सियतों का स्वागत करते हुए ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व को सिक्ख जगत और गुरु नानक-नाम लेवा संगत के लिए ख़ास मौका कहा। उन्होंने कहा कि आज जीवन में तबदीली लाने के लिए प्रेरणा का दिवस है और आज के दिन सबको गुरु साहिब की शिक्षाएं जीवन में धारण करने के लिए प्रण करना चाहिए। भाई लौंगोवाल ने एलान किया कि आने वाला सारा वर्ष गुरु साहिब के ५५०वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित रहेगा, जिसमें गुरमति समागमों का सिलसिला जारी रखा जायेगा। उन्होंने सभी जत्थेबंदियों, सभा-सोसायटियों और संगत का धन्यवाद करते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जल्द ही शुक्राना समागम करवा कर प्रकाश पर्व के अवसर पर सहयोग देने वाले महापुरुषों, जत्थेबंदियों, टकसालों, निहंग सिंघ दलों, लंगर एवं अन्य सेवाएं करने वाली सोसायटियों को सम्मानित किया जायेगा।

मंच-संचालन की सेवा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ द्वारा निभाई गई।